A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 03 जनवरी, 2026

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 95, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

यूपी-जातिगत बैठकें और सत्ता की बेचैनी यानी नया सामाजिक संतुलन?

डॉ. प्रांजल सिंह

क्या जातिगत बैठकों से उत्तर प्रदेश की राजनीति एक बार फिर जाति के खुले प्रश्न पर लौट आएगी, या ये बैठकें सत्ता की नई बनावट से उपजी बेचैनी का संकेत हैं? यह सवाल 23 दिसंबर 2025 की शाम और ज़्यादा प्रासंगिक हो गया, जब विधायक निवास में ब्राह्मण समाज की एक अहम बैठक हुई। यह बैठक पंचानंद पाठक के लखनऊ स्थित सरकारी आवास पर आयोजित हुई।

सहभोज के नाम पर हुई इस बैठक की पृष्ठभूमि प्रदेश में ब्राह्मण समाज की कथित राजनीतिक उपेक्षा थी। यह उपेक्षा आदित्यनाथ योगी सरकार के दौर में महसूस की जा रही है। विपक्ष लंबे समय से योगी पर ठाकुर-समर्थक होने का आरोप लगाता रहा है। दरअसल, इस पूरे घटनाक्रम को देखें तो उत्तर प्रदेश की राजनीति अब किसी एक चुनाव, एक दल या एक जाति तक सीमित नहीं रही है। यह गहरे सामाजिक पुनर्संयोजन, सत्ता की बदलती बनावट और 'सम्मान' की नई परिभाषा को लेकर चल रही तीखी खींचतान की कहानी है।

लखनऊ की कड़ाके की ठंड के बीच विधायक निवासों में जो सियासी तपिश दिखी, वह केवल मौसम के खिलाफ खड़ी राजनीति नहीं थी, बल्कि उस असंतोष की अभिव्यक्ति थी, जो लंबे समय से सत्ता के भीतर दबा हुआ था। ब्राह्मण विधायकों की बैठक ने इस दबे हुए असंतोष को सार्वजनिक मंच पर ला दिया। यह कोई साधारण सामाजिक जमावड़ा नहीं था, बल्कि राजनीतिक अस्तित्व, प्रतिनिधित्व और घटते प्रभाव को लेकर पैदा हुई बेचैनी का खुला संकेत था।

इस बैठक में सिर्फ भाजपा ही नहीं, बल्कि विपक्षी दलों के ब्राह्मण विधायक भी शामिल हुए। अपने वर्चस्व की तलाश में जातिगत गोलबंदी ने दलीय सीमाओं को तोड़ दिया, क्योंकि सवाल अब पार्टी का नहीं, बल्कि जातीय राजनीतिक भविष्य का था। यह बैठक सत्ता के भीतर से उठी एक संगठित आवाज़ है, जिसे नज़रअंदाज़ करना आसान नहीं होगा।

उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणों की आबादी लगभग 9-10 प्रतिशत और ठाकुर/क्षत्रियों की 7-8 प्रतिशत मानी जाती है। यानी दोनों को मिलाकर करीब 16-18 प्रतिशत का वह सामाजिक आधार, जो किसी भी बहुकोणीय चुनाव में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

2017 के विधानसभा चुनाव और 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की भारी जीत के पीछे जिस 'सामाजिक इंजीनियरिंग' की चर्चा हुई, उसमें ब्राह्मण-ठाकुर समर्थन एक मज़बूत स्तंभ था। इससे पहले 2012 में समाजवादी पार्टी की सत्ता-वापसी में भी ब्राह्मण नेतृत्व को सत्ता-संरचना में जगह देना रणनीति का अहम हिस्सा रहा। इतिहास गवाह है, जब इस वर्ग को सत्ता में सम्मानजनक हिस्सेदारी का भरोसा मिलता है, तो वह सत्ता को स्थिरता देता है; और जब उसे लगता है कि उसकी भूमिका केवल प्रतीकात्मक रह गई है, तो वही वर्ग सत्ता के सामने असहज सवाल खड़े करने लगता है।

उच्च जातियों का यह राजनीतिक प्रमेय भाजपा पर तो काफी हद तक फिट बैठता है, लेकिन अन्य क्षेत्रीय दलों की वैचारिक प्रतिबद्धताओं के विपरीत जाता है। सपा और बसपा–दोनों ने जब-जब उच्च जातियों के साथ गठबंधन किया, उन्हें क्षणिक लाभ तो मिला, लेकिन पार्टी की आंतरिक बनावट कमजोर होती चली गई। बसपा के साथ ब्राह्मण गठबंधन हाथी को गणेश तो बना देता है, लेकिन दलित सशक्तीकरण पीछे छूट जाता है। सपा में माता प्रसाद पांडे को नेता विपक्ष चुने जाने के बाद इसका असर क्या होगा, यह अभी देखना बाकी है।

इसलिए उत्तर प्रदेश की राजनीति की कहानी केवल सवर्ण असंतोष तक सीमित नहीं है। इसके समानांतर एक कहीं ज़्यादा गहरा और ऐतिहासिक बदलाव भी चल रहा है–पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों का राजनीतिक हस्तक्षेप और सशक्तीकरण। मंडल आयोग के बाद सत्ता की सामाजिक बनावट में जो बदलाव शुरू हुआ, उसने राजनीति की दिशा ही बदल दी। हाल के वर्षों में भाजपा ने भी गैर-यादव ओबीसी और दलित समूहों–निषाद, कुर्मी, कुशवाहा, जाटव, को संगठित कर सत्ता की बनावट को अपेक्षाकृत व्यापक बनाया है।

इसी बदलते परिदृश्य में समाजवादी पार्टी के नेता विपक्ष माता प्रसाद पांडेय की 'सम्मान की वापसी' वाली भाषा सामने आती है। सवाल यह है कि यह सम्मान किसका है और किस संदर्भ में लौटेगा? इस बहस को और जटिल बनाता है समाजवादी पार्टी प्रमुख का रुख, जिसमें वे माता प्रसाद पांडेय की इस भाषा को वैधता देते दिखाई देते हैं। एक ओर सपा पीडीए पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक के नारे के साथ सामाजिक लामबंदी में जुटी है, वहीं दूसरी ओर 'सम्मान की वापसी' जैसे संकेत पार्टी के भीतर मौजूद वैचारिक द्वंद्व को उजागर करते हैं। यह विरोधाभास बताता है कि बदलते सामाजिक समीकरणों के बीच सत्ता तक पहुँचने की रणनीति कितनी जटिल हो गई है।

लोकनीति-सीएसडीएस के पोस्ट-पोल सर्वे के आँकड़े इस विमर्श को ठोस आधार देते हैं। सर्वे के मुताबिक सामान्य या अगड़ी जातियां, ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार और वैश्य–अब भी बड़े पैमाने पर भाजपा के साथ खड़ी हैं। इसके उलट पिछड़ी जातियां, अनुसूचित जातियाँ और मुस्लिम मतदाता 'इंडिया' गठबंधन को प्राथमिकता दे रहे हैं।

आर्थिक वर्गों के आधार पर मतदान व्यवहार तस्वीर को और जटिल बनाता है। 2024 के आम चुनावों में भले ही भाजपा अपने दम पर बहुमत से पीछे रह गई हो, लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बड़े हिस्से ने अब भी भाजपा को वोट दिया। यह दिखाता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और कल्याणकारी योजनाएँ अब भी गरीब और निम्न वर्ग के एक हिस्से को भाजपा से जोड़े हुए हैं, लेकिन यह समर्थन दलित और पिछड़े समुदायों में समान रूप से मज़बूत नहीं है।

इन सभी तथ्यों को साथ रखकर देखें तो ब्राह्मण-ठाकुर बैठकों की बेचैनी, 'सम्मान की वापसी' की भाषा और PDA की आक्रामक राजनीति एक ही प्रक्रिया के अलग-अलग चेहरे हैं। यह प्रक्रिया सत्ता की सामाजिक बनावट में हो रहे बदलाव की है। सवर्ण राजनीति अपने घटते प्रभाव को लेकर असहज है, जबकि पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समुदाय बढ़ते राजनीतिक आत्मविश्वास के साथ सत्ता में स्थायी हिस्सेदारी की मांग कर रहे हैं। आगामी विधानसभा चुनाव इसी टकराव की निर्णायक परीक्षा होंगे।

यह चुनाव केवल भाजपा बनाम सपा या किसी गठबंधन का मुकाबला नहीं होगा। यह तय करेगा कि उत्तर प्रदेश की राजनीति 'सम्मान' को कैसे परिभाषित करती है–बराबरी और हिस्सेदारी के रूप में, या फिर पुराने वर्चस्व की स्मृतियों के सहारे।

लखनऊ की ठंड में उभरी यह सियासी गर्मी दरअसल उसी संघर्ष की आंच है, जिसमें सत्ता, समाज और इतिहास आमने-सामने खड़े हैं। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति आज सिर्फ चुनाव नहीं लड़ रही, बल्कि अपने भविष्य की वैचारिक दिशा तय कर रही है।

(दि प्रिंट में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

इंदौर के भागीरथपुरा के दूषित जल कांड की गाज दो अफसरों पर गिरी

15 मौतों के बाद अपर आयुक्त को हटाया, कमिश्नर को नोटिस

इंदौर। भागीरथपुरा में दूषित पेयजल की आपूर्ति से हुई 15 मौतों के बाद दो अधिकारियों का तबादला कर दिया। निगम कमिश्नर को भी कारण बताओ नोटिस जारी किया। एक और गंभीर बीमार महिला की मौत के बाद मृतकों की संख्या 15 हो गई। शुक्रवार को नगर निगम की ओर से हाई कोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट अदालत में पेश की गई। हाईकोर्ट ने कलेक्टर और निगम आयुक्त को नोटिस जारी किए। निगम की लापरवाही पर कांग्रेस ने प्रदर्शन किया।

शुक्रवार सुबह मुख्य सचिव सहित वरिष्ठ अधिकारियों के साथ हुई उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने निगम कमिश्नर आईएएस दिलीप यादव को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। अपर आयुक्त आईएएस रोहित सिसोनिया को तत्काल पद से हटाने का आदेश दिया। साथ ही नगर निगम में लंबे समय से जल वितरण कार्य देख रहे कार्यपालन इंजीनियर संजीव श्रीवास्तव से भी जिम्मेदारी वापस ले ली गई। निगम कमिश्नर दिलीप कुमार यादव के रवैये से भी नगर निगम कर्मचारियों में रोष है। वे न तो जनता से मिलते हैं और न किसी की समस्याएं सुनते हैं। उनके तेवर से भी निगम में शिकायत है।

हाई कोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट पेश

अब यह मामला पूरी तरह न्यायिक दायरे में आ गया। शुक्रवार को नगर निगम की ओर से इस मामले में स्टेटस रिपोर्ट अदालत में पेश की। एक नई जनहित याचिका पर हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए कलेक्टर शिवम वर्मा और निगम कमिश्नर दिलीप कुमार यादव को नोटिस जारी किए। अधिवक्ता मनीष यादव ने अदालत में आपत्ति दर्ज कराते हुए कहा कि रिपोर्ट में केवल चार मौतों का उल्लेख है, जबकि वास्तविक आंकड़े इससे कहीं अधिक हैं। उन्होंने मृतकों के परिजनों को दी जाने वाली मुआवजा राशि बढ़ाने और विस्तृत, तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने की भी मांग की।

दूषित पानी से और मौत

शुक्रवार को 60 वर्षीय गीता बाई धुरकर की इलाज के दौरान मौत हो गई, जिससे इलाके में दहशत और आक्रोश का माहौल है। इस घटना के बाद दूषित पानी से मरने वालों की संख्या को लेकर प्रशासन और स्थानीय नागरिकों के दावों में बड़ा अंतर सामने आया। बीते 9 दिनों से भागीरथपुरा में उल्टी-दस्त का प्रकोप है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार अब तक करीब 1400 लोग इस बीमारी से प्रभावित हुए। इनमें से 272 मरीजों को अस्पताल में भर्ती कराया। इनमें 32 का आईसीयू में इलाज जारी है। 71 मरीजों को स्वस्थ होने पर छुट्टी दी गई।

लीकेज के कारण पेयजल दूषित

सीएमएचओ डॉ माधव प्रसाद हासानी ने पुष्टि की है कि पाइपलाइन में लीकेज के कारण पेयजल दूषित हुआ। अधिकारियों के अनुसार जिस स्थान पर लीकेज मिला, उसके ऊपर शौचालय बना हुआ था। लगातार हो रही मौतों ने प्रशासनिक व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। लोग दोषियों पर सख्त कार्रवाई और शुद्ध पेयजल की तत्काल व्यवस्था की मांग कर रहे हैं।

कांग्रेस का उग्र प्रदर्शन

यूथ कांग्रेस ने नगर निगम कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करते हुए निगम प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोला। प्रदर्शनकारियों ने जिम्मेदार अधिकारियों पर गंभीर लापरवाही के आरोप लगाए और जमकर नारेबाजी की। यूथ कांग्रेस नेताओं ने कहा कि क्षेत्र में लंबे समय से दूषित पानी की आपूर्ति की शिकायत की जा रही थीं, लेकिन निगम ने आंखें मूंदे रखीं। प्रदर्शन के दौरान माहौल तनावपूर्ण हो गया, पुलिस ने स्थिति संभाली और कई कांग्रेसी नेताओं व कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया।

खाचरौद को दी सांदीपनि विद्यालय और नवीन कृषि उपज मंडी की सौगात

प्रदेश के विकास की गति अब होगी और भी तेज : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी सरकार प्रदेश के 'समग्र विकास' के संकल्प के साथ काम कर रही है। हमारा मध्यप्रदेश अब विकास की नई ऊंचाइयों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हम सुनिश्चित कर रहे हैं कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और कोई भी वर्ग या व्यक्ति विकास की मुख्यधारा से वंचित न रहे। विकास की बात पर हम सबका सहयोग लेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों में विकास की बयार है। विकास की यह गति अब और तेज होगी। आप सबके सेवक के रूप में वे खुद चौबीसों घंटे सातों दिन प्राण-प्रण से सेवा में जुटे हुए हैं। सबका कल्याण ही हमारा लक्ष्य है। नागरिकों की समृद्धि और खुशहाली ही हमारा पारितोषिक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को उज्जैन जिले के खाचरौद में विकास कार्यों के लोकार्पण-भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खाचरौद को विभिन्न विकास कार्यों की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने यहां 78 करोड़ 61 लाख रुपये की लागत वाले पूर्ण एवं प्रस्तावित 39 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। इसमें 48 करोड़ 51 लाख रुपये की लागत के 16 कार्यों का लोकार्पण एवं 30 करोड़ 10 लाख रुपये की लागत वाले 23 कार्यों का भूमिपूजन शामिल है।

खाचरौद में बनेगा फूड प्रोसेसिंग पार्क

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्षेत्र में बहुतायत से होने वाली हरी मटर को देश-विदेश तक पहुंचाने और अन्य सभी फसलों को भी मार्केट लिंकेज दिलाने के लिए खाचरौद में फूड प्रोसेसिंग पार्क बनाने और खिलाड़ियों के लिए नया स्टेडियम बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि खाचरौद से रतलाम को डायरेक्ट फोर लेन से जोड़ा जाएगा।

5 करोड़ की लागत से बनेगा फोरलेन हाई-वे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नागदा से खाचरौद से जावरा से उज्जैन होते हुए करीब 5 हजार करोड़ रुपये की लागत से नया फोरलेन हाई-वे बनाया जा रहा है। इससे पूरे क्षेत्र का चहुंमुखी विकास होगा। उन्होंने कहा कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल राष्ट्रीय नदी लिंक परियोजना से मालवा-निमाड़ और चंबल का पूरा क्षेत्र भरपूर सिंचाई की स्थायी सुविधा से लाभान्वित होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगले 5 सालों में हम प्रदेश की सिंचाई क्षमता बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर कृषि रकबे तक पहुंचा देंगे।

भारत का युवा जाग गया है, वह अपने देश को समर्थ बनाना चाहता है

- असुरक्षा में नहीं भयमुक्त होकर जीना चाहिए : भागवत
- 16 जिलों के युवाओं से सरसंघचालक का संवाद

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के प्रसंग पर सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी का देशभर में प्रवास हो रहा है। इसी श्रृंखला में उनका दो दिवसीय प्रवास भोपाल में हुआ। प्रवास के पहले दिन कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में उन्होंने युवाओं से संवाद किया। उन्होंने कहा कि संघ अपने जन्म से ही लक्ष्य लेकर चल रहा है कि अपने धर्म-संस्कृति का संरक्षण कर, अपने भारत को परम वैभव पर लेकर जाना है। संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक यह प्रतिज्ञा करता है। उन्होंने कहा कि कोई भी देश सम्पूर्ण समाज के योगदान से ही बड़ा होता है। नेता, नीति और व्यवस्था, ये सब तब सहायक होते हैं जब समाज गुण सम्पन्न होता है। भारत का युवा जाग गया है, वह अपने देश को समर्थ बनाना चाहता है। संघ युवाओं से आह्वान करता है कि वे संघ की शाखा में आएं या फिर संघ की योजना से चल रहे अपने रुचि के कार्य में जुड़कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें।

उन्होंने कहा कि यदि हमें देश के लिए कुछ करना है तो इस मार्ग में हमें गुणों को धारण करना होगा और अहंकार एवं स्वार्थ छोड़ने होंगे। दुनिया में संघ ने ही एकमात्र ऐसी पद्धति दी है, जो अच्छी आदतें विकसित करती है। उन्होंने कहा कि संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार हर क्षेत्र में कार्य करते थे। लेकिन उन्हें चिंता यह थी कि देश में एकता कैसे स्थापित होगी। इस भाव को उत्पन्न करने वाले संगठन का नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। दुनिया में कहीं दूसरी पद्धति नहीं है व्यक्ति निर्माण की। उन्होंने कहा कि संघ की शाखा देशभक्ति सिखाती है। यदि इसका अनुभव लेना है और उद्देश्य को जीना है तो शाखा एकमात्र जगह है। यहां कोई बंधन नहीं है।

सरसंघचालक डॉ. भागवत जी ने कहा कि हम कई बार असुरक्षा और चिंता के साथ जीते है। लेकिन इसकी बजाय हमें भयमुक्त होकर जीना चाहिए। स्वयं से पहले देश को रखना चाहिए। अपने विकास से देश और परिवार प्रगति कर रहा है कि नहीं यह सोचना चाहिए। युवाओं को ही देश बनाना है और वे हर बात में आगे भी आते हैं। उन्होंने कहा कि जब आप देश की बात करते हैं तो प्रश्नों के जवाब देने होंगे और उसके लिए योग्यता लाना पड़ेगी। संघ में आकर तैयार होना पड़ेगा। मैं युवाओं से आहवान करता हूं कि वे आए और संघ का अनुभव लें।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख श्री दीपक विस्पुते और भोपाल करुणा धाम के प्रमुख श्री सुदेश शांडिल्य जी महाराज ने युवाओं को संबोधित किया। इस अवसर पर मंच पर मध्यभारत प्रांत के सह संघचालक डॉ. राजेश सेठी उपस्थित रहे।

युवाओं के प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दिया– युवा संवाद में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने युवाओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए। 100 वर्ष पूर्ण होने पर संघ की भूमिका पर उन्होंने कहा कि विश्व शक्ति की सुनता है और संघ संपूर्ण समाज को साथ लेकर धर्म की रक्षा करते हुए देश को नया रास्ता दिखाता है। महाशक्ति एकत्रित कर रहा है। उन्होंने कुली फिल्म का उदाहरण देते हुए कहा कि उस समय युवा लाल कुर्ता या शर्ट पहनते थे। यानी फैशन फॉलो करते हैं। उन्होंने कहा कि हम ऐसे युवाओं का निर्माण कर रहे हैं? जो समाज में सार्थक फैशन को बढ़ाएं।सुरक्षा और करियर को लेकर पूछे गए प्रश्न के उत्तर में कहा कि सुरक्षा की गारंटी कोई नहीं दे सकता। बिना चिंता जीवन जिए। मनुष्य अलग है, क्योंकि वह रिस्क लेता है।

– शेष पेज 2 पर

शरद की सुबह

प्रेम
सूखे तालाब में उग आई
किसी जिद्दी घास की तरह है
न बारिश का भरोसा
न किसी माली की निगाह
फिर भी
हर सुबह
अपने लिए
थोड़ी सी जगह बना लेता है
धरती
कठोर है
और कदमों के नीचे
इतिहास के पत्थर पड़े हैं
हर पत्थर पर
कोई न कोई चेतावनी खुदी है
जिन्हें पढ़ते-पढ़ते
आँखें थक जाती हैं
प्रेम
इन चेतावनियों को नहीं तोड़ता
बस
उनके बीच की दरारों में
अपनी जड़ें डाल देता है
कभी
किसी हाथ की गर्मी में
कभी
किसी अधूरी बात के कंपन में
यह
लहलहाता नहीं
क्योंकि लहलहाना
ध्यान खींचता है
और जब
तेज़ धूप
सब कुछ जला देने को होती है
प्रेम
अपने ही साए में
खुद को बचा लेता है।

– मालिनी गौतम

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25°c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 03 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब कौन संभालेगा बांग्लादेश की बागडोर?

(**सुधीर सक्सेना**)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री और बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की चेयरपर्सन बेगम खालिदा जिया नहीं रहीं। 30 दिसंबर को फज्र की नमाज के बाद उन्होंने ढाका के एवर केयर हास्पिटल में अंतिम सांस ली। वह 23 नवंबर से अस्पताल में भर्ती थीं और दिल, ज़िगर और गुर्दे के अनेक विकारों के अलावा मधुमेह और उच्च रक्तचाप से पीड़ित थीं। रात दो बजे के करीब अस्पताल के डॉ. प्रो. एजेडएम हुसैन ने पत्रकारों को यह कहकर ब्रीफ किया कि बेगम ज़िया गंभीर संकट से गुज़र रही हैं, लेकिन करीब चार घंटों के बाद उन्होंने ऐलान किया कि 80 वर्षीया बेगम नहीं रहीं। गौरतलब है कि बेगम शेख हसीना वाजेद के भारत में शरण लेने के बाद बेगम जिया बांग्लादेश में सबसे शक्तिशाली नेता के तौर पर चिन्हित थीं और आगामी 12 फरवरी को आसन्न चुनाव में उनकी पार्टी बीएनपी की सत्ता में वापसी का कयास लगाया जा रहा था। बेगम जिया ने जब आंखें मूंदी, तब उनका भरपुरा कुनबा वहां मौजूद था। उनके बेटे तारिक रहमान, बहू जुबैदा रहमान, बेटी ज़ैमा के अलावा दिवंगत पुत्र अराफत रहमान कोके की बेवा सैयदा शमीला रहमान और बेटियां जाहिया एवं जाफिया, छोटा भाई शमीर इस्कंदर उसकी पत्नी कनीज फातिमा, दिवंगत भाई सईद की पत्नी नसरीन और बहन सेलिना इस्लाम उनके आखिरी लम्हों में उनकी नज़रों के सामने थे। बेगम जिया का जन्म 12 फरवरी, सन 1945 को भारत में जलपाईगुड़ी में हुआ था। उनका लाड़प्यार का नाम पुतुल था। विभाजन पर उनका परिवार पूर्वी पाकिस्तान चला गया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा दिनाजपुर में मिशनरी एवं गर्ल्स स्कूल में हुई। सन 1965 में कैप्टेन जिया उर रहमान से शादी के बाद वह पाकिस्तान चली गयीं। बाद में कैप्टेन जिया बांग्लादेश के राष्ट्रपति रहे और खालिदा सन 1977-81 में देश की प्रथम महिला। कैप्टेन जिया ने सन 1978 में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की स्थापना की। 30 मई, 1981 को कैप्टेन जिया की हत्या के बाद जनवरी, सन 82 में बेगम ने बीएनपी ज्वाइन की और 10 मई सन् 84 को वह पार्टी की चेयरपर्सन चुनी गयीं। जीवन के आखिरी पल तक वह इस पद पर बनी रहीं। सन् 1991 से 1996 और फिर सन 2001 से 2006 तक प्रधानमंत्री रहकर उन्होंने इतिहास रच दिया। सन 2008 से 2014 के दरम्यान वह शेख हसीना वाजेद के प्रधानमंत्रित्व काल में नेता प्रतिपक्ष रहीं।

दरअसल, बांग्लादेश की राजनीति में खालिदा जिया और शेख हसीना को प्रतिद्वंद्वी और विरोधी विचारधारा के प्रतिनिधि के तौर पर देखा जाता रहा है। शेख हसीना को जहां भारत के साथ अच्छे संबंधों और अल्पसंख्यकों के प्रति सदाशयता की हिमायती के तौर पर देखा जाता है, वहीं खालिदा जिया भारत-विरोधी बांग्ला राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व करती रहीं। वह मजहबी ताकतों को पोसने के लिये जानी जाती हैं। तीस्ता तीरे जनमी खालिदा की चर्चा आमोखास में रही है। उन्हें कमर मुरादावादी का शेर 'अब मैं समझा तिरे रूख्सार पे तिल का मतलब। दौलते-हुस्न पे दरबान बिठा रखा है' निहायत पसंद था। माना जा रहा था कि वह बीएनपी के पुनर्सत्तारोहण की वाहिका बनेंगी, लेकिन उनके निधन से सियासत की मुंडेर पर अटकलों का सब्जे उग आये हैं। यह सौ फीसदी तय है कि अब उनका बेटा तारिक उनका उत्तराधिकार संभालेगा और अवामी लीग पर पाबंदी के साये में चुनाव के बाद वही बतौर पीएम देश की बागडोर संभालेंगे। यूं तो बांग्लादेश की सियासत बंगबंधु मुजीबुर्रहमान की हत्या के बाद ही बेपटरी हो गयी थी, किंतु शेख हसीना के पलायन के बाद कटटरपंथी इस्लामी तत्वों की बन आई है। हिंदुओं की नृशंस हत्याएं और दमन इसका प्रमाण है। बांग्लादेश में भारत विरोधी भावना को पाकिस्तान और चीन शह दे रहे हैं और उनकी गुप्तचर एजेंसियां वहां सक्रिय हैं।

ढाका-इस्लामाबाद-वीजिंग नयी धुरी के तौर पर उभर रहे हैं ओर भारतीय सीमा के मात्र 12-15 किमी दूर लालमोनिरहाट एयरबेस को फिर से शुरू करने की चीन को अनुमति मिल गई है। अचरज की बात है कि इस्रायल बांग्ला फौज को प्रशिक्षण व उपकरण दे रहा है। हालात संकेत करते हैं कि आगामी समय में दिल्ली और ढाका के रिश्तों में खटास बढ़ेगी।

जहां कांग्रेस सरकार वहां ईवीएम पर सबसे ज्यादा भरोसा!

- कर्नाटक सरकार के सर्वे में 91 फीसदी लोगों ने माना निष्पक्ष हुए चुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों के दौरान राज्य सरकार की ओर से कराए गए एक सर्वे की रिपोर्ट अब सामने आई है, जिसने बीजेपी को कांग्रेस पर हमला करने का बड़ा मौका दे दिया है। दरअसल, इस सर्वे में कर्नाटक के लोगों से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम की विश्वसनीयता को

लेकर सवाल पूछे गए थे। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक, 83.5 प्रतिशत लोगों ने ईवीएम को विश्वसनीय बताया है। वहीं, 69.3 प्रतिशत लोगों का कहना है कि ईवीएम से बिल्कुल सटीक नतीजे सामने आते हैं। इसके अलावा 14.3 प्रतिशत लोगों ने पूरी मजबूती के साथ ईवीएम पर अपना भरोसा जताया है। जानकारी के मुताबिक, इस सर्वे में बेंगलुरु, बेलगावी, कलबुर्गी और मैसूरु क्षेत्र के साथ-साथ राज्य के प्रमुख डिवीजनों को शामिल किया गया था। कुल 102 विधानसभा क्षेत्रों में यह सर्वे कराया गया और 5100 से अधिक उत्तरदाताओं से सवाल-जवाब किए गए।

पाकिस्तान सीमा पर 'बॉर्डर-2' की टीम करेगी हथियारों की पूजा

- बीएसएफ जवानों के बीच 'घर कब आओगे' गाना करेंगे लॉन्च

जैसलमेर (एजेंसी)। जैसलमेर में भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर सनी देओल स्टारर फिल्म 'बॉर्डर 2' का गाना घर कब आओगे बीएसएफ जवानों के बीच आज शाम लॉन्च किया जाएगा। इसके लिए अभिनेता वरुण धवन, अहान शेट्टी, सिंगर सोनू निगम और निर्माता भूषण कुमार जैसलमेर पहुंच गए हैं। तनोट माता मंदिर के सामने एम्फीथिएटर में सनी देओल, सोनू निगम, वरुण धवन और अहान शेट्टी गाने पर लाइव परफॉर्मेंस

देंगे। इस दौरान म्यूजिक डायरेक्टर मिथुन और गीतकार मनोज मुंतशिर भी मौजूद रहेंगे। अनुराग सिंह निर्देशित फिल्म बॉर्डर 2 की टीम तनोट माता मंदिर में दर्शन करने भी जाएगी। यहां वे तनोट माता की आरती में शामिल होंगे और हथियारों की पूजा भी करेंगे। सनी देओल का तनोट माता से जुड़ाव नया नहीं है। साल 2023 में फिल्म गदर 2 की रिलीज से पहले भी सनी देओल जैसलमेर आए थे। तनोट माता की आरती में शामिल होकर फिल्म की सफलता की मन्नत मांगी थी। गदर 2 ने देश में 500 करोड़ से ज्यादा का कारोबार किया और कई रिकॉर्ड बनाए। सनी देओल का मानना है कि तनोट माता की कृपा से उनके करियर को नई दिशा मिली। उनके इसी विश्वास के चलते बॉर्डर 2 जैसी महत्वाकांक्षी फिल्म के गाने को किसी सिनेमाघर, स्टूडियो या होटल के बजाय उसी पावन भूमि से लॉन्च करने का निर्णय लिया।

अब राजस्थान के बच्चे भी स्कूल में पढ़ेंगे समाचार पत्र

यूपी के बाद अब राजस्थान सरकार की बड़ी पहल

जयपुर (एजेंसी)। सरकारी स्कूलों में शिक्षा को पुस्तकों से आगे ले जाकर व्यवहारिक और समसामयिक बनाने की दिशा में राजस्थान सरकार ने भी अहम पहल की है। उत्तर प्रदेश के बाद अब राजस्थान के सरकारी स्कूलों में भी विद्यार्थियों को समाचार पत्र पढ़ने का अवसर मिलेगा। प्रार्थना सभा के दौरान एक हिंदी और एक अंग्रेजी समाचार पत्र का वाचन कराया जाएगा, जिससे बच्चे देश-दुनिया की घटनाओं से जुड़ सकें और उनकी भाषा व समझ का स्तर बेहतर हो। हाल के दिनों में उत्तर प्रदेश सरकार ने सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र वाचन की व्यवस्था लागू की थी। इसका उद्देश्य बच्चों की भाषा, शब्दावली और समसामयिक समझ को मजबूत करना था। अब राजस्थान ने भी इसी माडल को अपनते हुए इसे अपनी शिक्षा व्यवस्था में लागू करने का निर्णय लिया है। राज्य सरकार के आदेश के अनुसार सभी सरकारी स्कूलों की लाइब्रेरी (वाचनालय) में समाचार पत्र उपलब्ध कराए जाएंगे।

बच्चों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की समझ देगा अखबार

शिक्षा विभाग का मानना है कि समाचार पत्रों का नियमित वाचन बच्चों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की समझ देगा। इससे उनमें विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी और वे जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। सरकार का यह कदम शिक्षा को अधिक जीवंत, व्यावहारिक और उपयोगी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है। इसी कड़ी में राजस्थान सरकार ने शिक्षा को समय की मांग के अनुरूप बनाने के लिए कृषि विज्ञान की पढ़ाई में भी बड़ा बदलाव किया है। आगामी शिक्षा सत्र से कक्षा 11 और 12 में कृषि विज्ञान विषय को अंग्रेजी माध्यम में भी पढ़ाया जाएगा।

सेना ने 2026 को नेटवर्किंग-डेटा सेंट्रिसिटी का साल घोषित किया

- जनरल द्विवेदी बोले-नवाचार हमारी ताकत का आधार है, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने गुरुवार को 2026 को 'नेटवर्किंग एवं डेटा-केंद्रितता (सेंट्रिसिटी) का वर्ष' घोषित किया है। साथ ही कहा कि यह पहल कनेक्टिविटी,

रियल-टाइम डिसिजन मेकिंग और कॉम्बेट इफेक्टिवनेस को बढ़ाएगी, जिससे भविष्य के लिए सेना की लचीलापन और फुर्ती और मजबूत होगी। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने नए साल के संदेश में कहा कि सेना परिवर्तन के एक दशक से गुजर रही है। आत्मनिर्भरता तथा नवाचार हमारी सैन्य ताकत के मूल आधार हैं। उन्होंने सेना के एक्स हैंडल पर पोस्ट किए गए अपने लिखित संदेश में कहा, स्वदेशी तकनीकों के प्रभावी उपयोग, नए विचारों और निरंतर सुधारों के माध्यम से सक्षम बनाएंगे।

देश के एयर डिफेंस की ताकत को मिलेगी अधिक मजबूती

- रक्षा मंत्रालय ने 36 मीटियोर मिसाइलों की खरीद को दी मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्रालय ने सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण के लिए चालू वित्तवर्ष 2025-26 में दिसंबर के अंत तक 1.82 लाख करोड़ रुपये के पूंजीगत अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने इंडियन एयर फोर्स के लिए 36 से अधिक अतिरिक्त मेटियोर बियॉन्ड-विजुअल-रेंज एयर-टू-एयर मिसाइलों की खरीद के लिए औपचारिक रूप से एक्सेप्टेंस ऑफ नेसेसिटी दे दी है। इस खरीद को मंजूरी से वायु सेना की एयर डिफेंस क्षमता मजबूत होगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली रक्षा अधिग्रहण परिषद ने इस सप्ताह अपने सबसे एडवांस फ्रांसीसी राफेल फाइटर जेट के लिए 36 मीटियोर एयर-टू-एयर मिसाइलों की खरीद को अप्रूव किया है। फॉलो-ऑन डील के फाइनल क्लोजर से पहले एनओसी लेने का फैसला, प्रोसीजरल अप्रूवल को फ्रंट-लोड करने की स्ट्रैटेजी दिखाता है। इससे कमर्शियल बातचीत फाइनल होने के बाद डिलीवरी टाइमलाइन कम हो जाएगी।

हम सबको जोड़ती है हिन्दू पहचान : सरसंघचालक

'प्रमुख जन गोष्ठी' को डॉ. भागवत ने किया संबोधित

भोपाल। हमारे मत-पंथ, सम्प्रदाय, भाषा, जाति अलग हो सकती है। लेकिन हिन्दू पहचान हम सबको जोड़ती है। हम सबकी एक संस्कृति और धर्म है। हम सबके पूर्वज समान हैं। यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने भोपाल में आयोजित 'प्रमुख जन गोष्ठी' में व्यक्त किए। मंच पर मध्यभारत प्रान्त के संघचालक अशोक पांडेय और भोपाल विभाग के संघचालक सोमकान्त उमालकर उपस्थित रहे।

सरसंघचालक डॉ. भागवत जी ने कहा कि हिंदुस्थान में चार प्रकार के हिन्दू रहते हैं- एक, जो कहते हैं कि गर्व से कहो हम हिन्दू है। दो, जो कहते हैं कि गर्व की क्या बात हैं, हम हिन्दू हैं। तीन, जो कहते हैं कि जोर से नहीं बोलो, आप घर में आकर देखो, हम हिन्दू ही हैं। चार, जो भूल गए हैं कि हम हिन्दू हैं। उन्होंने कहा कि जब-जब हम यह भूल जाते हैं कि हम हिन्दू हैं तो विपत्ति आती है। भारत का इतिहास देख लीजिए। इसलिए हिन्दू को जगाना और संगठित करना आवश्यक है। हमें समझना होगा कि हिन्दू धार्मिक पहचान से बढ़कर, स्वभाव और प्रकृति है। धर्म को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि धर्म का अर्थ रिलीजन नहीं है। धर्म का अर्थ पूजा-पद्धति नहीं है। धर्म सबको साथ लेकर चलता है। सबका उत्थान करता है। धर्म सबके लिए आनंददायक है। स्वभाव धर्म है। कर्तव्य धर्म है। आपस में सद्भावना रखकर सब लोग चलें, इसके लिए जो संयम चाहिए, वह धर्म है। उन्होंने कहा कि रुचि-प्रकृति के भेद के अनुसार रास्ते अनेक हैं लेकिन हम सबको जाना एक ही जगह हैं। मनुष्य प्रकृति अनुसार अपने मार्ग का चुनाव करता है।

किसी से तुलना करके संघ को नहीं समझा जा सकता – सरसंघचालक ने कहा कि संघ के बारे में नैरेटिव बहुत चलते हैं। कई बार किसी को जानने के लिए उसके जैसे किसी से तुलना करते हैं। लेकिन जो अनूठा हो, उसकी तुलना नहीं की जा सकती। संघ दुनिया में अनूठा संगठन है। इसलिए संघ को किसी से तुलना करके नहीं समझा जा सकता। संघ गणवेश पहनकर पथ संचलन करता है तो यह पैरा मिलिट्री फोर्स नहीं है। सेवा कार्य चलाता है, उन्हें देखकर यह नहीं मानना चाहिए कि संघ समाजसेवी संगठन है। संघ को लेकर संघ

हितैषी और संघ विरोधी, दोनों ने ही कई ऐसी बातें समाज में चलाई हैं, जो संघ नहीं है। इसलिए शताब्दी वर्ष पर विचार बनाया कि समाज के सामने संघ की सही जानकारी जानी चाहिए।

किसी की प्रतिक्रिया या विरोध में शुरू नहीं हुआ है संघ – सरसंघचालक डॉ. भागवत ने कहा कि संघ किसी की प्रतिक्रिया में शुरू हुआ संगठन नहीं है। संघ की किसी से प्रतिस्पर्धा भी नहीं है। संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने देश-समाज के हित में चलने वाले सभी प्रकार के कार्यों में सहभागिता की। स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया। यह सब काम करते हुए वे चिंतन-मंथन करते थे। बालगंगाधर तिलक, वीर सावरकर, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय और डॉ. भीमराव अंबेडकर सहित उस समय के कई महापुरुषों के साथ देश की परिस्थितियों को लेकर उनकी चर्चा हुई है। उनको ध्यान आया कि बाहर से आने वाले मुट्ठीभर लोग, जो हमसे कमतर हैं, इसके बाद भी हमको, हमारे घर मे आकर ही पराजित कर देते हैं। हम स्वतंत्र हो गए तो फिर से पराधीन नहीं होंगे, इसकी क्या गारंटी है। स्वाधीनता को सुनिश्चित और स्थायी करने के लिए समाज को 'स्व' का बोध कराना होगा। भारत के भाग्य को बदलना है तो इस समाज को ठीक करना होगा। तब डॉ. हेडगेवार ने तय किया कि समाज में एकता और गुणवत्ता स्थापित करने के लिए संघ का कार्य प्रारंभ करना चाहिए। उन्होंने संघ की घोषणा करने के बाद कई प्रयोग किए। लगभग 14 वर्ष कार्य के बाद एक कार्य पद्धति विकसित हुई।

डॉ. भागवत ने बताया, संघ ने प्रारंभ से तय किया कि समाज में प्रेशर ग्रुप के तौर पर संगठन खड़ा नहीं करना है। अपितु सम्पूर्ण हिन्दू समाज का ही संगठन करना है। क्योंकि समाज ही किसी देश का भाग्य निर्धारित करता है। नेता, नीति, अवतार तो सहायक हो सकते हैं। देश को बड़ा बनाने में गुणसम्पन्न समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। उन्होंने कहा कि समाज को बदलना है तो वातावरण बदलना पड़ता है। संघ शाखा के माध्यम से ऐसे कार्यकर्ताओं का समूह खड़ा करने का काम कर रहा है, जो राष्ट्रीय वातावरण बनाएं। उन्होंने कहा कि संघ केवल स्वयंसेवक निर्माण का कार्य करता है। स्वयंसेवक समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सब प्रकार का कार्य करते हैं। स्वयंसेवकों के किसी भी कार्य को संघ रिमोर्ट कंट्रोल से नहीं चलाता है।

उपेक्षा और विरोध के बाद भी आगे बढ़ा संघ – सरसंघचालक डॉ. भागवत ने कहा कि उपेक्षा के बावजूद संघ के कार्यकर्ता निराश नहीं हुए। उपेक्षा और विरोध के बाद भी भारत माता के प्रति आस्था रखते हुए आगे बढ़ते रहे। उन्होंने कहा कि दुनिया का ऐसा कोई संगठन नहीं है, जिसने इतना विरोध सहा हो, जितना संघ ने सहा है। विपरीत परिस्थितियों में अपना सबकुछ दांव पर लगाकर कार्यकर्ताओं से संघ का कार्य किया है।

समाज में कई लोग अच्छा कार्य कर रहे हैं – सरसंघचालक ने कहा कि भलाई के रास्ते पर समाज को चलाने का कार्य करने वाला संगठन केवल संघ है, ऐसा हम नहीं कहते हैं। समाज के सभी मत-संप्रदायों में इस प्रकार की सज्जन शक्ति है। इन सबके बीच एक नेटवर्क होना चाहिए। समाज की यह सज्जन शक्ति एक-दूसरे की पूरक बने। यही वातावरण बनाने का काम संघ कर रहा है। उन्होंने बताया कि दुनिया के अलग-अलग देशों से लोग संघ के पास आते हैं और संघ कार्य को समझते हैं। सबका एक ही प्रश्न होता है कि हमारे यहां के लोगों को भी यह कार्य सिखाया जा सकता है क्या?

पंच परिवर्तन का आह्वान – समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए समाज के प्रमुख जनों से सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने पंच परिवर्तन का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्व बोध और नागरिक अनुशासन से संबंधित कार्य हम सबको मिलकर करना चाहिए।

नासिक में विद्योत्तमा सम्मान से सम्मानित होंगे विनोद नागर

भोपाल। राजधानी के वरिष्ठ लेखक, पत्रकार, समीक्षक और स्तंभकार विनोद नागर को नये साल में महाराष्ट्र के नासिक में 'विद्योत्तमा साहित्य विभूति' सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन्हें आगामी 11 जनवरी को नासिक के माहेश्वरी भवन में विद्योत्तमा फाउंडेशन द्वारा आयोजित सारस्वत सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। चयन समिति के अध्यक्ष सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि नागर का चयन उनकी पुस्तक 'लिखा तो छपा' के लिये किया गया है। विगत पांच दशक से लेखन और पत्रकारिता के क्षेत्र में

निरंतर सक्रिय श्री नागर की अभी तक 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं विनोद नागर को हाल ही में उज्जैन में मौनतीर्थ हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'साहित्य गौरव' सम्मान प्रदान किया गया है। उन्हें गत वर्ष मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का नरेश मेहता सम्मान भी मिल चुका है। नागर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं और दूरदर्शन केंद्र, भोपाल से संयुक्त निदेशक (समाचार) के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद पिछले एक दशक से लेखन एवं पत्रकारिता में सक्रिय हैं।

पेज–1 का शेष

भारत का युवा जाग गया है, वह अपने देश को समर्थ बनाना चाहता है

दुनिया सक्सेस को देखती है, लेकिन जैसे ही उस पथ पर चलने की कोशिश करते हैं तो संघर्ष देखकर डर जाते हैं। इसलिए बेहतर करियर वह है जिसमें आप उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पाएं और डर भी न लगे। सुविधा से सुख नहीं मिलता। एआई के सवाल पर बोले कि हमें एआई को कंट्रोल करना है, न कि कंट्रोल होना है। उसका उपयोग विकास में करना है। हमें ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जो एआई या अन्य तकनीक का उपयोग देश हित में करें।

संघ उत्सव नहीं मना रहा, लोगों के दिलों तक पहुंचने पर काम कर रहा है– श्री दीपक विस्पुते जी– कार्यक्रम के प्रथम सत्र में अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख श्री दीपक विस्पुते जी ने संघ की 100 साल की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ को 100 वर्ष में खूब प्रसिद्ध मिली। लेकिन संघ का प्रचार किया विरोधियों ने और नकारात्मक भाव में किया। इन्होंने कभी संघ को समझने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने बताया कि संघ वर्ष 1925 में नागपुर से प्रारंभ हुआ और जिस तरह भागीरथ ने गंगा पृथ्वी पर लेकर आए ठीक वैसे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने संघ कार्य को समाज के बीच लेकर गए। इसके पहले भारत में कभी इस तरह का प्रयास नहीं हुआ। डॉक्टर साहब ने नागपुर की बजाय कोलकता को पढ़ाई के लिए चुना और स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लिया। लेकिन उन्हें महसूस हुआ कि देश के हिन्दू समाज को मानसिक गुलामी से मुक्त कराना होगा। श्री विस्पुते ने बताया कि संघ स्वामी विवेकानंद की तीन बातों का अनुशरण करते हुए काम करता है। पहली बात भारत के समाज को आर्गनाइजेशन सीखना पड़ेगा। दूसरा भारत में मेन मेकिंग यानी व्यक्ति के निर्माण की प्रक्रिया जरूरी है और तीसरी बात कि आने वाले 50 साल के लिए देश को प्राथमिकता पर रखकर भारत माता की आराधना करना चाहिए। संघ इसी विचार पर काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि संघ ने समय-समय पर जरूरत को देखकर अन्य संगठन खड़े किए। इसमें युवाओं के लिए अभाविप, मजदूरों के लिए मजदूर संघ, किसानों के लिए, सेवा कार्यों के लिए सेवा भारती संगठन खड़े किए। उन्होंने कहा कि लोगों को भरोसा नहीं था, लेकिन डॉक्टर साहब ने और श्रीगुरूजी ने वह करके दिखाया। उन्होंने कहा कि संघ 100 वर्ष पूरे होने पर उत्सव नहीं मना रहा है, बल्कि डोर टू डोर मेन टू मेन और हार्ट टू हार्ट पहुंचने की कोशिश कर रहा है। मेरा भी क्या योगदान देश और संघ के लिए हो सकता है, इसके लिए प्रयास करें।

संघ युवाओं को सामर्थ्यवान बना रहा है– भोपाल करुणा धाम के प्रमुख श्री सुदेश शांडिल्य जी महाराज ने युवाओं से कहा कि अक्सर हम सुनते हैं 'समरथ को नहीं दोष गुसाई'। इसका यह मतलब नहीं है कि कोई बलवान है, उसको दोष नहीं दिया जाता। वास्तव समर्थ वह है जिसकी नीयत में दोष नहीं हो। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समर्थ बनेगा तभी भारत विश्वगुरु बनेगा। इसलिए संघ का समर्थ होना जरूरी है। परोपकार, सद्चरित्र, जनकल्याण की भावना और यश के पीछे नहीं भागने की भावना कहीं दिखाई दे रही है, तो वह केवल संघ है। उन्होंने सूर्य, गंगा का उदाहरण देते हुए कहा कि सूर्य सबको बराबर रोशनी देता है। गंगा के जल में लोग स्नान भी करते हैं और गंदे नाले भी मिलते हैं। लेकिन वह अविरल बह रही है, क्योंकि उसमें सामर्थ्य है सभी को समाहित करने का। ऐसे ही युवाओं को सामर्थ्यवान बनना है। आगे बढ़ने के लिए पीछे का छोड़ना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि कि भारत में युवाओं को सामर्थ्यवान बनाने का काम केवल संघ कर रहा है। उसकी शाखाओं में 100 साल से व्यक्ति का निर्माण हो रहा है। साथ ही ईश्वर की आराधना करें, वह आपको सामर्थ्य देता है।

पार्षद के दबाव में नर्मदा लाइन के ऊपर बिछाई ड्रेनेज लाइन, लापरवाही उजागर

रहवासियों की बातों को अनसुना किया गया, यह लीकेज जानलेवा बना

इंदौर। भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी पीने से हुई गंभीर घटना के बाद अब नगर निगम हरकत में आया। दो दिनों से निगम की टीमें गलियों में नर्मदा जल लाइन के लीकेज की जांच कर रही हैं। इस दौरान निगम की लापरवाही और तथाकथित इंजीनियरिंग व्यवस्था की चौंकाने वाली सच्चाई सामने आई। निगम की जांच में पाया गया कि अधिकांश गलियों में नर्मदा जल सप्लाई लाइन के ठीक ऊपर ड्रेनेज लाइन बिछाई गई। ड्रेनेज के चैंबर भी जल लाइन के ऊपर ही बना दिए। इससे सीवरेज और पेयजल के मिलने का गंभीर खतरा पैदा हो गया।

इस मामले की जड़ नवंबर 2024 में डाली गई ड्रेनेज योजना से जुड़ी है। उस समय रहवासियों ने स्पष्ट रूप से मांग की थी कि ड्रेनेज लाइन घरों के पीछे मौजूद बैकलेन से बिछाई जाए, जहां पर्याप्त जगह उपलब्ध है। लेकिन, भाजपा पार्षद कमल वाघेला ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। पार्षद व रहवासी आमने-सामने आ गए और विवाद इतना बढ़ा कि पार्षद धरने पर बैठ गए। अंततः निगम ने विवाद से बचने के लिए ड्रेनेज लाइन का काम ही रोक दिया, जिसका खामियाजा अब पूरे इलाके को भुगतना पड़ा।

छह महीने से शिकायत, सुनवाई नहीं

इलाके के लोग पार्षद के रवैये को लेकर बेहद नाराज हैं। उनका आरोप है कि 6 महीनों से वे गंदे पानी की शिकायत कर रहे, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। भागीरथपुरा टंकी पर निगम कर्मी की जगह पार्षद के कार्यकर्ता बैठते थे, जो शिकायत तो दर्ज करते थे। लेकिन, जोनल कार्यालय के कर्मचारी शिकायत मिलने से ही इनकार कर रहे हैं। रहवासी बताते हैं कि वे कई बार समस्या लेकर पार्षद के घर गए, लेकिन कभी गंभीरता से नहीं सुना गया। अब दूषित पानी से सैकड़ों लोगों के बीमार होने की घटना के बाद निगम और जनप्रतिनिधियों की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो गए।

भागीरथपुरा दूषित जल संकट पर सरकार सख्त, एसीएस ने खुद जाकर पानी परखा

टंकी से नलों तक निरीक्षण, सूंघकर जांच, सप्लाई से पहले पांच बार परीक्षण

इंदौर। भागीरथपुरा में दूषित पानी की सप्लाई से हुई मौतों के बाद शासन पूरी तरह अलर्ट मोड में नजर आ रहा है। गुरुवार सुबह नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे अफसरों के दल के साथ भागीरथपुरा पहुंचे और पूरे क्षेत्र का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने कई घरों में नलों से आ रहे पानी की स्वयं जांच की, पानी को हाथ में लेकर सूंघकर देखा और रहवासियों से सीधे बातचीत कर हालात की जानकारी ली। घटना के बाद पहली बार भागीरथपुरा की पानी की टंकी से जल प्रदाय किया गया, जिसे लेकर प्रशासन पूरी तरह चौकस रहा। करीब डेढ़ से दो घंटे तक संजय दुबे निगम और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ गलियों में घूमते रहे और स्थिति का जायजा लेते रहे। निरीक्षण के दौरान निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव, अपर आयुक्त रोहित सिसोनिया, सीएमएचओ डॉ. माधव हसानी सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। नगर निगम अधिकारियों ने उन्हें बताया कि सीवरेज और जलापूर्ति लाइनों में हुई लीकेज की मरम्मत कर दी गई है तथा आज पुनः पानी के सैंपल लिए जा रहे हैं। रहवासियों ने अफसरों को बताया कि पिछले कई दिनों से नलों में गंदा पानी आ रहा था और इसकी शिकायत पहले भी की गई थीं, लेकिन समय पर कार्रवाई नहीं होने से यह गंभीर हादसा हुआ। अफसरों ने नर्मदा जल की सप्लाई वाली लाइनों की स्थिति देखी और संभावित लीकेज को लेकर जानकारी ली।

पांच बार जांच के बाद सप्लाई

पानी सप्लाई शुरू करने से पहले टंकी और आसपास की लाइनों की पांच बार जांच की गई। नर्मदा प्रोजेक्ट के सहायक यंत्रियों और उपयंत्रियों ने अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर पानी की गुणवत्ता परखी, इसके बाद ही जलप्रदाय को हरी झंडी दी गई।

स्वास्थ्य केंद्रों की भी जांच

अपर मुख्य सचिव दुबे ने क्षेत्र के संजीवनी क्लिनिक का निरीक्षण कर पिछले 15 दिनों के मरीजों के रजिस्टर देखे। उन्होंने उल्टी-दस्त से जुड़े मामलों, रेफर किए गए मरीजों और उपचार व्यवस्था की जानकारी ली। साथ ही निगम द्वारा पिछले दो दिनों में किए गए लीकेज सुधार और नई लाइन बिछाने के कार्यों की भी समीक्षा की। संजय दुबे ने रहवासियों से चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनीं और निगम अधिकारियों को निर्देश दिए कि नागरिकों को पानी उबालकर और छानकर ही उपयोग करने के लिए लगातार अनाउंसमेंट कराए जाएं। साथ ही सीवरेज और पानी की लाइनों में किए गए सुधार कार्यों का भी निरीक्षण किया गया। इसके अलावा दुबे ने भागीरथपुरा स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण कर मरीजों के रजिस्टर देखे और यह जानकारी ली कि कितने मरीज उपचार के लिए अस्पताल भेजे गए हैं।

नए साल के पहले दिन 3 शराब दुकानों के लाइसेंस निरस्त हुए

शेष अवधि के लिए 6 जनवरी तक टेंडर बुलाए गए

इंदौर। कलेक्टर शिवम वर्मा के आदेश पर आबकारी विभाग ने तीन दुकानों के लाइसेंस नववर्ष के पहले दिन एक जनवरी से निरस्त कर दिए। इस दुकानों के बचे हुए वित्तीय वर्ष तक दोबारा संचालन के लिए 6 जनवरी तक टेंडर बुलाए जाएंगे। सहायक आयुक्त अभिषेक तिवारी ने बताया कि वितीय वर्ष 2025-26 के लिए मदिरा एकल समूह क्रमांक आईएनडी-3 द्वारकापुरी(जिसमें द्वारकापुरी, अहीरखेड़ी एवं रेत मंडी चौराहा की दुकानें सम्मिलित है) के लाइसेंसों को कलेक्टर के आदेश पर निरस्त कर दिया है। इसके बाद शेष अवधि 7 दिन से 31 मार्च 206 तक उक्त समूह का ई टैंडर (ई टेंडर एवं ई टेंडर कम आक्शन) के माध्यम से पुनर्निष्पादन करने एनआईसी के एमपी टैंडर पोर्टल के माध्यम से ई टैंडर आमंत्रित किए गए हैं। जारी निष्पादन कार्यक्रम अनुसार कोई भी इच्छुक व्यक्ति, फर्म, एलएलपी, कंपनी, कन्सोर्टियम उक्त वेबसाइट पर जाकर 6 जनवरी तक प्रातः 11.30 बजे तक अपना ई टेंडर-ई टेंडर कम ऑक्शन सबमीट कर सकता है। उक्त प्रक्रिया में भाग लेने हेतु बिडर को ई आबकारी पोर्टल के कांट्रेक्टर रजिस्ट्रेशन मॉडयूल में पंजीकृत होना अनिवार्य है। इस संबंध में आवश्यक जानकारी एनआईसी के पोर्टल एवं मध्यप्रदेश आबकारी विभाग की वेबसाइट एक्साइज.एमपी.जीओवी.इन से भी डाउनलोड की जा सकती है तथा कार्यालय सहायक आयुक्त से कार्यालयीन समय में (अवकाश के दिनों सहित) प्राप्त की जा सकती है।

मुआवजे का चेक लेने से इनकार किया

इंदौर। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय मृतकों के परिजनों को मुआवजा राशि के चेक वितरित करने पहुंचे, लेकिन इसी दौरान हालात बिगड़ गए। मृतक परिजनों ने चेक लेने से इनकार करते हुए हंगामा शुरू कर दिया और मौतों के वास्तविक आंकड़े छिपाने का आरोप लगाया। भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी पीने से फैली बीमारी ने गंभीर रूप ले लिया है। अब तक 198 लोग बीमार होकर अस्पताल में भर्ती हैं, जबकि कई लोगों की जान जाने की बात सामने आ रही है। क्षेत्र में मीडिया से चर्चा में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बताया कि 1400 से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं, जिनमें 198 का इलाज अस्पताल में जारी है और कई मरीज स्वस्थ होकर डिस्चार्ज हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग, नगर निगम और प्रशासन की टीमें पूरे क्षेत्र में तैनात हैं। मंत्री के अनुसार सरकारी रिकॉर्ड में मौतों का आंकड़ा फिलहाल चार है, जबकि स्थानीय स्तर पर यह संख्या 15 बताई जा रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि अन्य अस्पतालों में हुई मौतों की पुष्टि होती है तो मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुसार सभी मृतकों के परिजनों को मुआवजा दिया

बदमाशों ने छात्र को घर से निकालकर पीटा

इंदौर। पीएससी का छात्र अपनी कार से जा रहा था, तभी सामने से आ रही बाइक टच हो गई। इस पर छात्र और बाइक चालक में विवाद हो गया। विवाद के बाद बाइक सवार युवक अपने एक दर्जन साथियों के साथ पहुंचा और छात्र को घर से निकालकर जमकर पीटा। बीच बचाव करने आए छात्र के चचेरे भाई के साथ भी मारपीट की गई। घटना का वीडियो एक जनवरी गुरुवार को सोशल मीडिया पर सामने आया है। मामले में भंवरकुआ पुलिस ने फरियादी निखिल रघुवंशी और उसके चचेरे भाई अक्षय की शिकायत पर आरोपी मोहित मौर्य, आयुष मौर्य, सोनू हार्डिया, अनिस पटेल, हर्ष बन्ना, परविंद्र जाट, मोहित शर्मा, चिट्टू पटेल सहित अन्य युवकों पर केस दर्ज कर लिया है। पीड़ित ने बताया कि वह रात करीब 11 बजे चचेरे भाई की कार से घर आ रहा था। इसी दौरान आयुष मौर्य की बाइक से कार टच होने से विवाद बढ़ गया। कुछ देर बाद आयुष अपने साथियों के साथ वहां पहुंचा और अक्षय को जबरन बाहर निकालरकर पीटा गया। फरियादी का आरोप है कि गंभीर मारपीट और वीडियो सबूत सामने होने के बावजूद राजनीतिक दबाव के चलते पुलिस ने आरोपियों पर सिर्फ सामान्य धाराओं में ही कार्रवाई की है। पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

एयरपोर्ट पर यात्री ने नशे में हंगामा किया

इंदौर। इंदौर एयरपोर्ट पर महिला यात्री से बदतमीजी का एक और मामला सामने आया है। इसके बाद आरोपी ने क्रू मेंबर को धमकी दी। मामले में एरोड्रम पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। जानकारी के मुताबिक, इंदौर से जम्मू जा रही फ्लाइट में शराब के नशे में धुत यात्री ने महिला सहयात्री के साथ अभद्रता की और विरोध करने पर एयरलाइंस स्टाफ को जान से मारने की धमकी दे दी। पुलिस के अनुसार, यह घटना फ्लाइट नंबर 6331 की है। सीट नंबर 12-ए पर बैठे नरेश कुमार निवासी जम्मू-कश्मीर ने नशे की हालत में महिला यात्री अंकिता दास के साथ लगातार बदतमीजी की। स्थिति बिगड़ती देख क्रू मेंबर आकांक्षा डोगरा ने हस्तक्षेप किया, लेकिन आरोपी ने उनसे भी गाली-गलौज शुरू कर दी। तैनात स्टाफ शिवम सांखला ने जब यात्री को शांत रहने की समझाइश दी तो वह और उग्र हो गया। आरोपी ने सुरक्षाकर्मियों और क्रू मेंबर्स को गालियां दीं। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है। गौरतलब है कि यह तीन दिनों में दूसरी बड़ी घटना है। इससे पहले एक अन्य यात्री ने इंडिगो की फ्लाइट में इमरजेंसी गेट खोलने की कोशिश की थी।

मृतकों में 6 महीने का बच्चा भी, गंदा पानी दूध में मिलकर जहर बन गया

बड़ी मन्नत से हुआ था बेटा, सरकार की लापरवाही ने जान ले ली

इंदौर। गंदे पानी का कहर अभी भी भागीरथपुरा में अपना असर दिखा रहा है। अपुष्ट जानकारी के मुताबिक, मरने वालों की संख्या 13 तक पहुंच गई। इनमें एक 6 महीने का बच्चा अभियान साहू भी है। जिसके बारे में कहा जा रहा कि मां ने उसे पानी मिलाकर ऊपर का जो दूध पिलाया, वह पानी से मिलकर जहर बन गया और उसने मासूम की जान ले ली। अभियान साहू की मां साधना और पिता सुनील ने बताया कि एक-दो दिन पहले ही उसे दस्त लगे थे। शिशु रोग विशेषज्ञ को दिखाया, उन्होंने दवाई दी, तो हमें लगा कि यह सामान्य है, बच्चा ठीक हो जाएगा। सोमवार सुबह चार-पांच बजे अचानक बच्चा रोते हुए उठा, हम उसे निजी अस्पताल में लेकर पहुंचे, जहां उसकी मौत हो गई। मां ने बताया कि मुझे दूध कम आता है, इसलिए दूध में पानी मिलाकर पिलाती थी। हमें नहीं पता था कि यह दूषित पानी है। इस संबंध में हमें कोई जानकारी नहीं थी।

बड़ी मन्नतों के बाद का बेटा था - साधना के मुताबिक, हमारी 2014 में शादी हुई। हमारी 10 साल की बेटी है, कोई बेटा नहीं था। इलाज और मन्नतों के बाद अभियान हुआ था। हमें लगा कि यह बुढ़ापे का सहारा बनेगा। पर, इन लोगों ने हमारे बच्चे की जान ले ली। पीछे वाली गली में भी दो माह की बच्ची की मौत हुई है। मां स्कूल में शिक्षिका है। 10 वर्षीय बहन भी बार-बार अपने भाई को याद करते हुए रो रही हैं। वह उसे अपनी जान से ज्यादा प्यार करती थी। वह कह रही है कि मैं राखी किसको बांधुंगी। मुझे लगा था कि मेरा भाई आ गया।

पूरे इलाके में गंदा पानी

भागीरथपुरा निवासी जीवनलाल बरेडे की भी इसी पानी के कारण मौत हुई। अब घर पर पत्नी अकेली रह गई। उन्हें 24-25 दिसंबर से उल्टी-दस्त की समस्या शुरू हुई थी। इलाज के लिए हमने घर पर ही डॉक्टर को बुलाया, पर इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। परिवार में भी 7 साल के बच्चे सहित चार लोग बीमार है, जिनका इलाज हो रहा है। इसके अलावा शंकर भाया (70), अशोक लाल पंवार और सुमित्रा देवी की मौत की जानकारी भी बुधवार को सामने आई। लोगों ने बताया कि उनकी मौत का कारण दूषित पानी है। पूरे क्षेत्र में दूषित पानी आता है। इसके बावजूद जिम्मेदार ध्यान नहीं देते हैं।

तेज आवाज वाले 101 साइलेंसर नष्ट 300 से ज्यादा वाहनों पर सख्ती की

इंदौर। कनाड़िया थाना पुलिस ने 1 जनवरी को शहर में शोर मचाने वाले तेज आवाज वाले साइलेंसरों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 101 साइलेंसरों को बुलडोजर से नष्ट कर दिया। ये सभी साइलेंसर हाल ही में तेज आवाज करने वाली बुलेट मोटरसाइकिलों पर की गई कार्रवाई के दौरान जब्त किए गए थे। यह अभियान एडिशनल डीसीपी अमरेन्द्र सिंह के निर्देश पर जोन-2 क्षेत्र में चलाया गया था। गुरुवार को टीआई सहर्ष यादव और उनकी टीम ने जब्त साइलेंसरों को सड़क पर रखवा कर सार्वजनिक रूप से नष्ट किया। वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि तेज आवाज करने वाले वाहनों के खिलाफ यह कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी, ताकि शहर में ध्वनि प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके।

300 से ज्यादा वाहनों पर कार्रवाई- 31 दिसंबर की रात पुलिस ने विशेष मुहिम चलाकर 300 से अधिक वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की। इस दौरान लापरवाही से वाहन चलाने वाले करीब 130 चार पहिया वाहनों को जब्त किया गया, जबकि लगभग 204 दोपहिया वाहनों पर भी कार्रवाई की गई। पुलिस अधिकारियों के अनुसार यह अभियान देर रात से लेकर सुबह 4 बजे तक चला। इस दौरान शहर के कई थाना क्षेत्रों में 200 से अधिक लोगों पर प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई की गई। इसके अलावा, सड़कों पर बाइक से हुड़दंग मचाने वाले युवाओं को भी पुलिस ने पकड़कर उनके खिलाफ सख्त कदम उठाए। पुलिस का कहना है कि इस तरह की मुहिम आगे भी जारी रहेगी।

पिता की मौत के सवा महीने बाद मां ने फांसी लगाकर खुदकुशी की

बेटा-बहू मौसी के घर से लौटे तो फंदे पर लटके हुए देखा

इंदौर। सवा माह पहले 16 नवंबर को लंबी बीमारी के चलते पिता की मौत हो गई थी। पति की मौत से तनाव में ग्रस्त महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय बेटा-बहू मौसी के घर गए थे। जब वे लौटकर आए तो मां को फंदे पर लटका देखा। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और पूरे मामले की जांच की जा रही है। हीरानगर पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान मधु शर्मा (65) निवासी बजरंग नगर के रूप में हुई है। 31 दिसंबर की रात करीब 11 बजे पड़ोसियों ने देखा कि महिला के घर का दरवाजा खुला हुआ है। शक होने पर उन्होंने अंदर झांककर देखा तो मधु शर्मा फंदे पर लटकी हुई मिलीं। इसके बाद तुरंत उनके बेटे अंकित शर्मा को सूचना दी गई। सूचना मिलने पर अंकित घर पहुंचा और मां को फंदे से नीचे उतारा, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी।

घटना के समय अकेली थी- पुलिस को भी घटना की जानकारी दी गई। इसके बाद मौके पर पहुंचकर पंचनामा कार्रवाई की गई। अंकित ने बताया कि घटना के समय उनकी मां घर पर अकेली थी। अंकित पेशे से इलेक्ट्रीशियन है और 31 दिसंबर की रात चर्च में लाइट लगाने और प्रार्थना कार्यक्रम के चलते वहीं गया हुआ था। वहीं से लौटकर पत्नी के साथ मौसी के घर चला गया था। अंकित के अनुसार, 16 नवंबर को बीमारी के चलते उसके पिता का निधन हो गया था। इसके बाद से मां काफी तनाव में रहने लगी थीं और किसी से ज्यादा बातचीत भी नहीं करती थीं।

2026 की नई रेलवे समय सारणी में 63 ट्रेनों का गति विस्तार किया

पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल में समय पालन की नई मिसाल

इंदौर। यात्रा को अधिक सुगम बनाने तथा ट्रेनों की समय पालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के परिचालन विभाग द्वारा वर्ष 2025 में ट्रेनों के परिचालन समय में उल्लेखनीय सुधार किया गया। साथ ही 1 जनवरी 2026 से लागू की गई नई समय सारणी में 63 ट्रेनों को स्पीड-अप (गति बढ़ाई) किया गया। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के अनुसार मंडल रेल प्रबंधक के कुशल मार्गदर्शन एवं परिचालन विभाग के अधिकारियों के प्रभावी निर्देशन में समय सारणी तैयार करने वाले पर्यवेक्षकों द्वारा ट्रेनों के लिंक एवं संसाधनों का बेहतर उपयोग किया गया। इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2025 में रतलाम मंडल पर 27 ट्रेनों की गति बढ़ाई गई, जिससे इन ट्रेनों के रनिंग टाइम में प्रतिदिन औसतन 107 मिनट की बचत हुई। आगे बताया गया कि 1 जनवरी 2026 से ट्रेनों के लिए नई समय सारणी लागू की गई है। नई समय सारणी के निर्माण में भी ट्रेनों के परिचालन समय को कम करने पर विशेष ध्यान दिया गया।

रनिंग टाइम में बचत- इसके फलस्वरूप 63 ट्रेनों की गति बढ़ाई गई। इनमें नागदा-रतलाम-गोधरा खंड की 26 ट्रेनें, नागदा-उज्जैन/भोपाल-इंदौर-डॉ अम्बेडकर नगर खंड की 27 ट्रेनें तथा रतलाम-चित्तौड़गढ़ खंड की 10 ट्रेनें शामिल हैं। इससे वर्ष 2026 में रतलाम मंडल पर चलने वाली ट्रेनों के रनिंग टाइम में साप्ताहिक आधार पर लगभग 2627 मिनट की बचत होगी।

इन ट्रेनों की गति बढ़ाई - नई समय सारणी के अंतर्गत जिन प्रमुख ट्रेनों को स्पीड-अप किया गया, उनमें दाहोद-वडोदरा मेमू (40 मिनट), दाहोद-रतलाम मेमू (15 मिनट), गोरखपुर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस (15 मिनट), भोपाल-डॉ. अम्बेडकर नगर इंटरसिटी (10 मिनट), नागपुर-इंदौर एक्सप्रेस (20 मिनट), बिलासपुर-इंदौर नर्मदा एक्सप्रेस (27 मिनट), उज्जैन-इंदौर पैसेंजर (10 मिनट), मंदसौर-कोटा एक्सप्रेस (10 मिनट), रतलाम-चित्तौड़गढ़ डेमू (15 मिनट), उदयपुर सिटी-रतलाम एक्सप्रेस (10 मिनट) एवं चित्तौड़गढ़-रतलाम डेमू (20 मिनट) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कई ट्रेनों को भी 2 से 8 मिनट तक स्पीड-अप किया गया है।

अन्य विभागों का योगदान - ट्रेनों की गति बढ़ाने में परिचालन विभाग के साथ इंजीनियरिंग (ट्रैक मेंटेनेंस), संकेत एवं दूरसंचार, यांत्रिक विभाग तथा सुरक्षा से जुड़े अन्य विभागों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ट्रेनों की गति बढ़ने से न केवल समय की बचत होगी, बल्कि कम समय में गंतव्य तक पहुंचने के कारण ऊर्जा की बचत भी सुनिश्चित होगी।

पुलिस ने ड्रोन कैमरे से 31 दिसम्बर की रात नजर रखी, कोई अप्रिय घटना नहीं

शहर में 100 से ज्यादा चेकिंग पॉइंट्स लगाए, वाहन चालकों की चेकिंग

इंदौर। नववर्ष के जश्न के दौरान शहर में शांति व्यवस्था बनी रहें। किसी प्रकार की घटना दुर्घटना न हो, इसे लेकर पुलिस आयुक्त के निर्देशन में मातहतों ने कई दिन पूर्व से ही कमर कस ली थी। इसका असर यह रहा कि पूरे शहर में थर्टी फर्स्ट की रात में कोई बड़ा विवाद या अप्रिय घटना या दुर्घटना नहीं हुई। कड़ी निगरानी और सख्त सुरक्षा व्यवस्था के चलते नागरिकों ने सुरक्षित और शांतिपूर्ण तरीके से नववर्ष के स्वागत का उत्सव पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया। 31 दिसम्बर की व्यवस्था के तहत शहरभर में पुख्ता सुरक्षा और यातायात व्यवस्था के लिए 2000 से अधिक का बल लगाया गया था।

100 से ज्यादा चेकिंग पाइंट- इनके द्वारा पूरे शहर में 100 से भी ज्यादा अधिक चेकिंग पॉइंट्स लगाए थे। इन पॉइंट्स पर एडिशनल कमिश्नर के नेतृत्व में चारों जोन के डीसीपी से लेकर एडीशनल डीसीपी, एसीपी और थाना प्रभारी मौजूद रहे। थानों का 60 प्रतिशत से ज्यादा बल फिल्ड में ही तैनात रहकर बदमाशों, नशेड़ियों और असामाजिक तत्वों पर नजर बनाए हुए था। ड्रोन कैमरों और नाइट विजन कैमरों के द्वारा भी सतत निगरानी की जा रही थी।

मोबाइल टीमों से पेट्रोलिंग

बेहतर सुरक्षा व्यवस्था के लिए आउटर, इनर सर्कल की पुलिस व्यवस्था लगाई गई थी। शहर में बाहरी क्षेत्रों से नशे की सप्लाय न हो, कोई अवैध गतिविधियां न हो इसे लेकर मोबाइल टीमें भी पेट्रोलिंग कर रहीं थी। अंदरूनी क्षेत्रों में चारों जोन व ट्रैफिक पुलिस ने जगह-जगह चेकिंग पॉइंट लगाए थे, जिससे हुड़दंग करने वाले सचेत रहे। इस दौरान पुलिस कमिश्नर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण ने भी खुद देर रात तक चेकिंग पॉइंट पर जाकर मॉनिटरिंग की गई। पुलिस द्वारा तय समय अनुसार सारे पब, बार एवं अन्य आयोजनों को बंद कराया गया। रोड पर कोई भी नशा कर वाहन न चलाएं, इसको लेकर सघन चेकिंग की गई। महिलाओं की सुरक्षा को लेकर शक्ति मोबाइल, महिला पीसीआर मय महिला बल के लगाई गई थी। जो पब, बार व विभिन्न आयोजन में महिलाओं की सुरक्षा पर नजर रख रही थी।

यह कार्रवाई की

पुलिस ने 334 लापरवाह वाहन चालकों को शराब पीकर गाड़ी चलाने पर पकड़ा गया। सार्वजनिक रूप से शराब का सेवन करने वाले पर 10 पर केस दर्ज किए। हथियार लेकर घूमने वाले 3 बदमाशों को पकड़ा। विभिन्न प्रकरणों में 10 स्थाई और 34 गिरफ्तारी वारंट वाले बदमाश पकड़ाए। शुक्रवार रात से अब तक 3000 से ज्यादा गुंडे-बदमाशों, लुटेरों, निगरानी बदमाशों, चाकूबाजों को चेककर, प्रतिबंधात्मक कार्रवाई के साथ ही शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले 1500 से ज्यादा वाहन चालकों पर कार्रवाई की। इसका असर यह हुआ कि 31 दिसम्बर की रात में शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले चालकों की संख्या में कमी आई है।

संपादकीय

यह संवेदनहीनता और शर्मनाक है

देश के सबसे स्वच्छ शहर में जहरीले जल से बेगुनाहों की मौतों का आंकड़ा बढ़कर 15 तक जा पहुंचा है, लेकिन सरकार अभी भी अधिकृत तौर पर चार मौते ही मान रही हैं। इंदौर के यह हादसा अब शर्मिंदगी का विषय बन गया है कि खुद के साफ होने पर गर्व करने वाले शहर में लोगों को साफ पानी तक नसीब नहीं है। इस पूरे घटनाक्रम के पीछे राजनेताओं और प्रशासन की हद दर्जे की लापरवाही और संवेदनहीनता सामने आई है। इस बीच हाई कोर्ट ने भी जनहित याचिका स्वीकार करते हुए सुनवाई की तारीफ 6 जनवरी तय की है। इस बीच राज्य सरकार ने भी इस मामले में कोर्ट में अपनी स्टेटस रिपोर्ट पेश कर दी है। इस मामले में इंटरविनर (हस्तक्षेप कर्ता) गोविंद सिंह बैस की ओर से मीडिया के पब्लिकेशन पर रोक लगाने की मांग की गई थी। इस पर कोर्ट ने कुछ भी टिप्पणी करना उचित नहीं समझा। उधर, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी मामले में संज्ञान लेते हुए मध्य प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव को नोटिस जारी कर दो सप्ताह के अंदर विस्तृत रिपोर्ट देने के लिए कहा गया है। इस बीच जमीनी हालात यह हैं कि भागीरथपुर बस्ती में दूषित पानी से प्रभावित 16 बच्चों समेत 201 लोग अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती हैं। सभी 15 लोगों की जान दूषित पानी की वजह से ही गई है। इसकी पुष्टि एमजीएम मेडिकल कॉलेज की लैब रिपोर्ट से हो गई।इंदौर कलेक्टर शिवम वर्मा का कहना है कि डिटेल्ड रिपोर्ट का इंतजार है। मेडिकल कॉलेज में कल्चर टेस्ट भी किया जा रहा है। यह मुद्दा अब राजनीतिक रंग भी लेने लगा है। प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने इसे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के लिए परीक्षा की घड़ी बताया। उमाजी ने कहा कि इस पाप का घोर प्रायश्चित करना होगा। वहीं, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि साफ पानी अहसान नहीं, जीवन का अधिकार है। इस अधिकार की हत्या के लिए बीजेपी का डबल इंजन, उसका लापरवाह प्रशासन और संवेदनहीन नेतृत्व पूरी तरह जिम्मेदार है। मप्र कुशासन का एपीसेंटर बन चुका है। भोपाल में युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इंदौर नगर भोपाल निगम और मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को इन मौतों का जिम्मेदार ठहराया। इसे लेकर छोटे तालाब के गंदे पानी में नाव पर बैठकर घंटे वाले मंत्री के पुतले को वही दूषित पानी पिलाया। इसके बाद उसी गंदे पानी में पुतले को डुबाया और नारे लगाए।इंदौर की इस दिल दहलाने की घटना के बाद राज्य के अन्य शहरों में भी पानी की सार्वजनिक टंकियों की जांच हो रही है। हालांकि उसमें खाना पूर्ति ज्यादा है। यह बात अब साफ हो चुकी है कि इंदौर की उस बस्ती में पेयजल और सीवर के पानी की सप्लाई एक साथ हो रही थी। ज्यादातर शहरों में पेयजल की लाइनें टूटी-फूटी हैं। उन्हें बरसों से बदला नहीं गया है। ऐसे में एक ही लाइन से पीने का पानी और गंदा पानी दोनो बह रहे हैं। स्थानीय लोगों ने कई बार इसकी शिकायत प्रशासन से की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इसका कारण सरकारी अमले की दिलचस्पी काम करने से ज्यादा माल कमाने में है। इस पूरे घटनाक्रम ने राज्य में पेयजल स्थिति की पोल खोल कर रख दी है। लीपापोती के लिए सरकार ने प्रति मृतक दो लाख रू. की मदद का ऐलान किया है, लेकिन सिस्टम की गलती के कारण जिन लोगों ने अपनी जानें गंवाई हैं, उसका क्या मुआवजा होगा। अगर सरकार ने इस पूरे प्रकरण को अभी भी गंभीरतापूर्वक नहीं लिया तो हमे इससे भी ज्यादा भयानक हादसे के लिए तैयार रहना चाहिए।

महापौर की चेतावनियां अफसरशाही के सामने बौनी

नजरिया

विक्रम सेन
(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

देश के सबसे स्वच्छ शहर में अस्वच्छ पानी से 14 लोगों की मौत हो गई और करीब 200 अस्पताल में भर्ती हैं, इनमें कई गंभीर हैं। क्या स्वच्छ शहर में पानी भी स्वच्छ होना चाहिए, यह सवाल आज भी जिंदा है। अरबों का फंड, फिर भी दूषित पानी ये बजट की बर्बादी है या अफसरशाही की नाकामी! इंदौर की जल व्यवस्था फेल क्यों हुई! ऐसे में महापौर पुष्यमित्र भार्गव की पीड़ा की गंभीरता को समझा जाना जरुरी है। उन्होंने इस दर्दनाक हादसे की जांच करने आए एसीएस संजय दुबे से भी कहा 'ऐसे सिस्टम में काम करना मुश्किल है!' उनकी यह पीड़ा दर्शाती है कि अफसरशाही कितनी निष्ठुर है जिसके कानों तक़ आवाज नहीं आती।

देश का सबसे स्वच्छ शहर, जो लगातार आठ सालों से स्वच्छता सर्वेक्षण में शीर्ष पर है, आज एक बुनियादी समस्या से जूझ रहा है। सवाल यह कि क्या स्वच्छता का तमगा सुरक्षित पेयजल की गारंटी भी देता है। भागीरथपुरा दूषित पानी कांड ने इस मिथक को तोड़ दिया। यह सिर्फ एक इलाके की स्वास्थ्य आपदा नहीं, बल्कि पूरी शहरी जल प्रशासन व्यवस्था की गहरी खामियों का प्रमाण है। इस संकट में एक व्यक्ति की भूमिका उजागर होती है महापौर पुष्यमित्र भार्गव की। उन्होंने समय रहते चेतावनी दी, निरीक्षण का आग्रह किया और सिस्टम की नाकामी को खुलकर उजागर किया। यह अजीब परिस्थिति महापौर के अंतर्मन की पीड़ा को उजागर करती है। क्योंकि, समस्या पानी की नहीं, बल्कि अफसरशाही की जिद और जवाबदेही के अभाव की है।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बार-बार अफसरों से सवाल किए कि क्या इंदौर सिर्फ दिखने में स्वच्छ है, या जीने लायक सुरक्षित भी है! भागीरथपुरा प्रकरण से पहले ही उन्होंने संबंधित अफसरों को बीमारी की सूचनाएं दी, मैदानी निरीक्षण का आग्रह किया और नगर निगम की कई बैठकों में अफसरों की निष्क्रियता को उजागर किया। लेकिन, व्यवस्था अपनी रफ्तार और सुविधा से चला। यही कारण है कि महापौर को कहना पड़ा 'ऐसे सिस्टम में काम करना मुमकिन नहीं।' यह कथन राजनीतिक असंतोष नहीं, बल्कि एक निर्वाचित जनप्रतिनिधि की प्रशासनिक हताशा है, जो जनहित के लिए सिस्टम से टकरा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी इस घटना पर दुख जताया और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया, लेकिन सवाल यह है कि महापौर की पूर्व चेतावनियों पर अमल क्यों नहीं हुआ। जांच रिपोर्ट्स से साफ है कि दूषित पानी का कारण पाइपलाइन में लीकेज था, जहां सीवर का पानी मिल गया।

महापौर ने प्रारंभिक जांच में इसे अफसरों की लापरवाही बताया, और कहा कि पाइपलाइन रखरखाव में जिम्मेदार लोगों की गलती है। उनकी यह बात सही साबित हुई, जब जोनल अधिकारी और असिस्टेंट इंजीनियर को निलंबित करने के अलावा एक सब-इंजीनियर को बर्खास्त किया गया। भागीरथपुरा दूषित पानी कांड को लेकर हुई बैठक में भी अधिकारियों के रवैये को लेकर महापौर पुष्यमित्र भार्गव का गुस्सा जमकर फूटा। उन्होंने एसीएस (अपर मुख्य सचिव) संजय दुबे से यहां तक कह दिया कि अधिकारी सुनते नहीं हैं। मैं ऐसे सिस्टम में काम नहीं कर सकता। आप चाहो तो यह संदेश मुख्यमंत्री तक पहुंचा दो। एसओआर आया नहीं, इसके पहले अधिकारियों ने फाइल स्वीकारना बंद कर दी। अधिकारी संवाद तक नहीं करते।

महापौर ने कलेक्टर शिवम वर्मा पर नाराजगी जताते हुए कहा कि मैंने आपको दो दिन पहले मैसेज किया था कि भागीरथपुरा में उल्टी-दस्त के मरीज मिले हैं। आप जाकर देखो, लेकिन आपने कुछ नहीं किया। जब हम अस्पताल पहुंचे, इसके बाद आप सक्रिय हुए। अगर समय रहते संज्ञान ले लिया जाता तो स्थिति इतनी नहीं बिगड़ती। एक अपर आयुक्त के पास पांच-पांच विभागों का प्रभार होने की बात भी उठी। महापौर ने

कहा कि अधिकारियों की वजह से काम प्रभावित हो रहा है। उन्होंने असहजता जताते हुए हाथ खड़े कर दिए और कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में काम करना कठिन है। मैं इसके लिए राजनीति में नहीं आया था। यह संदेश मुख्यमंत्री तक पहुंचा दें।

एसीएस ने कहा कि हम इंदौर नगर निगम को कुछ और अधिकारी दे देते हैं। इस पर महापौर ने कहा कि अधिकारियों की कमी नहीं है। जो अधिकारी हैं वे ईमानदारी से काम कर लें तो स्थिति सुधर जाएगी। लेकिन, निगम आयुक्त ने एक अपर आयुक्त को पांच-पांच विभाग दे रखे हैं जबकि दूसरे अपर आयुक्त फ्री हैं। महापौर ने बार-बार कहा कि ऐसी स्थिति में काम करना मुश्किल है। अधिकारी काम ही नहीं करना चाहते हैं। वे मुझे बता दें कि एक काम के लिए कितनी बार फोन करना पड़ेगा। अगर वे कहेंगे कि सौ बार, तो मैं सौ बार फोन लगाऊंगा, लेकिन 101वीं बार मैं फोन एसीएस को करूंगा। महापौर ने दुखद हादसे की खुद जिम्मेदारी स्वीकारी, लेकिन वरिष्ठ अफसरों पर भी कार्रवाई की मांग की, जो सिस्टम की जड़ता को दर्शाता है।

इंदौर में पिछले एक दशक में जल आपूर्ति और सीवरेज सुधार के लिए हजारों करोड़ रुपए खर्च हुए। नर्मदा जल प्रदाय परियोजना, अमृत योजना, अमृत 2.0 और 'स्मार्ट सिटी मिशन' के तहत कुल अनुमानित व्यय 4,000-6,000 करोड़ रुपए है (राज्य बजट, केंद्र के अंश और नगर निगम के हिस्से सहित)। हाल ही में अमृत 2.0 के तहत एसपीएमएल इंफ्रा को 1,073 करोड़ रुपए का प्रोजेक्ट दिया गया, जिसमें 1,650 एमएलडी का रॉ वाटर इंटेक, 400 एमएलडी का ट्रीटमेंट प्लांट, पंपिंग स्टेशन और 22 किमी पाइपलाइन शामिल है। स्मार्ट सिटी के तहत एरिया बेस्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट में वाटर सप्लाई और सीवरेज के लिए 697 करोड़ रुपए का प्रावधान है, जिसमें नई पाइप लाइन, जीएसआर और डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क शामिल हैं।

कागज पर दावे बड़े किए गए, चौबीस घंटे साफ़ पेयजल, पुरानी लाइनों का पूर्ण प्रतिस्थापन, सीवर और पेयजल लाइनों का पृथक्करण, शून्य लीकेज और जलजनित बीमारियों में कमी। लेकिन, जमीनी हकीकत इसके विपरीत। भागीरथपुरा के पानी में सीवरेज के पानी के मिश्रण की पुष्टि, पुरानी 40-50 साल पुरानी पाइपलाइन अभी भी चालू, और अधूरे सीवर कनेक्शन। दरअसल, कमी फंड की नहीं, इच्छाशक्ति की है। महापौर ने इन मुद्दों पर पहले ही अफसरों को चेताया था, लेकिन उनकी अनदेखी ने संकट को जन्म दिया। महापौर की अफसरों से निरंतर लड़ाई इसी मुद्दे पर चल रही हैं। महापौर ने भागीरथपुरा की शिकायत अफसरों के संज्ञान में पहले लाई, जब मरीज पहले मिले, तो महापौर ने अफसरों को चेतावनी पहले दी, लेकिन कार्रवाई तब हुई जब मौतें हो गईं।

शुरुआत में इस दुखद हादसे के समय स्वास्थ्य विभाग ने लीपा पोती की, कोशिश करते हुए मात्र तीन मौतें बताई। लेकिन महापौर ने सात की पुष्टि की, जो उनकी मैदानी जानकारी और वास्तविकता उजागर करने की क्षमता को दर्शाती है। यह प्रशासनिक संस्कृति का लक्षण है, जहां फाइलें मीडिया संकट पर चलती हैं, और मैदानी निरीक्षण 'असुविधा' माने जाते हैं। नगर निगम में एक अपर आयुक्त के पास चार-पांच विभाग, यह अव्यवस्था नहीं, जानबूझकर की गई लापरवाही है। इसका नतीजा यह निकला कि निर्णयों में देरी और फील्ड कंट्रोल शून्य। महापौर इस पूरे घटनाक्रम में अलग खड़े दिखे, उन्होंने बीमारी की सूचना पहले दी, हालात पर चेताया, अफसरों से संवाद किया और खुले मंच पर सिस्टम पर सवाल उठाए। उनका बयान 'ऐसे सिस्टम में काम करना मुमकिन नहीं' एक संवैधानिक पदधारी की हताशा है, जो जनप्रतिनिधि की चेतावनी को नजरअंदाज करने वाले निजाम से टकरा रहा है।

महापौर और अफसरों के बीच समन्वय की कमी का जिक्र आया, जो वास्तव में अफसरशाही की जिद को उजागर करता है। क्योंकि, अधिकारी नहीं सुनते। इसलिए कि सिस्टम जवाबदेह नहीं है। अधिकारी जानते हैं कि उन्हें लापरवाही का दंड नहीं मिलेगा। जांच सामूहिक, कार्रवाई संस्थागत, दंड स्थानांतरण तक ही सीमित है। लोग बीमार पड़ते हैं, सिस्टम नहीं। ऐसे में महापौर ने इस जड़ता के खिलाफ आवाज उठाई, जो उनकी जनहित प्रतिबद्धता दिखाती है। भागीरथपुरा चेतावनी है, जिसे महापौर की दूरदृष्टि से जानना जरूरी है। विधायकों ने कहा कि दूषित पानी हर बस्ती की समस्या है, हजारों शिकायतें लंबित है। नगर निगम रिएक्टिव मोड में है, प्रिवेंटिव नहीं। आज भागीरथपुरा, कल कोई और जब तक सिस्टम नहीं बदलेगा। महापौर ने इसे पहले भांपा, लेकिन उनकी चेतावनी अनसुनी रही।

इंदौर की जल व्यवस्था का संकट तकनीकी नहीं, नैतिक और प्रशासनिक है। यह लड़ाई मेयर बनाम अधिकारी की नहीं, जनहित बनाम जड़ निजाम की है। महापौर जनता के लिए सिस्टम से टकराए, चेतावनी दी और कार्रवाई की मांग की। जब तक फंड का स्वतंत्र ऑडिट, अधिकारियों की व्यक्तिगत जवाबदेही और जनप्रतिनिधियों की चेतावनी को आदेश का दर्जा नहीं मिलेगा, इंदौर स्वच्छ तो रहेगा, लेकिन सुरक्षित नहीं। महापौर का पक्ष अपने स्तर पर मजबूत है, वे मजबूत लालफीताशाही में राजनीति करने नहीं, समाधान का हिस्सा बनने के प्रयास करते हैं। लेकिन, उनकी आवाज कहां तक पहुंचेगी, कह नहीं सकते। क्योंकि, सड़ते हुए सिस्टम में ऐसी आवाजें नक्कारखाने में गूंजती तो है, पर वो अफसरशाही के कान तक नहीं पहुंचती।

नागरिक श्रेणी के सिद्धांत से ख़त्म होंगी असमानता

आरक्षण

डॉ. संजीव कुमार
लेखक सामाजिक एवं राजनीतिक मामलों के जानकार हैं।

जाति आधारित अपराध, धार्मिक अपराध, धर्म परिवर्तन के नाम पर हिंसा। यह ऐसे अपराध है जो इस देश का पीछा नहीं छोड़ रहे। हमने इस देश को आगे बढ़ाने और दुनिया के साथ खड़े होने के लिए बहुत प्रयोग किये परंतु सफलता अभी भी हमारे आसपास नहीं दिखाई दे रहा है। हमने छुआछूत और अस्पृश्यता मिटाने के लिए दलित और आदिवासियों को आरक्षण दिया। इस आरक्षण की सुविधा को देखते हुए पिछड़ी जातियों ने भी अपने हक अधिकार के लिए सरकार से सवाल किया नतीजन और उन्हें भी आरक्षण प्रदान किया गया। फिर समाज में मांग उठी की क्या सवर्ण गरीब नहीं है, तो हमने उनके लिए भी आरक्षण की व्यवस्था कर दी। पर सवाल अब भी वही का वही है की क्या इससे समाज में फैली ऊंच नीच की भावना मिट गई? समाज में समानता आ गई ? धार्मिक सुधारों और उनके संरक्षण के लिए हमने अनेकों कमेटियां बनाई पर आज भी अल्पसंख्यक धर्म तमाम समस्याओं से जूझ रहे हैं, जिस पर सिर्फ और सिर्फ राजनीति ही की जा रही है। समाज के हर हिस्से का गरीब व्यक्ति समझ नहीं पा रहा है कि उसकी मूल समस्या क्या है। वह मंदिर मस्जिद और जाति की लड़ाई में उलझा हुआ है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, न्याय और असमानता की समस्या उसकी जिंदगी को दिन प्रतिदिन नरकीय बना रही हैं।

आज देश जाति और धर्म की सड़ांध से बजबजा रहा है। सैकड़ों राजनीतिक पार्टियों हजारों समाज सुधारक संगठन जाति, धर्म के नाम पर अपनी- अपनी रोटियां सेक रहे है। जबकि इनसे देश का कभी उद्धार नहीं हुआ है। आज हर व्यक्ति अपने धर्म और जाति पर बेवजह गर्व करके एक दूसरे को नीचा दिखाने का कार्य कर रहा है। हम सब जानते है सबके इतिहास धूमिल हैं। यह लोग कालांतर में ना कभी मिलकर एक साथ रहे थे ना भविष्य में एक-दूसरे के साथ मिलकर रहेंगे। गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर ने अपनी पुस्तक राष्ट्रवाद में लिखा है कि भारत और एशिया की समस्या यह है कि वह कभी अपने अतीत से बाहर नहीं निकलना चाहता। ऐसा इसलिए है क्योंकि सब के अतीत शर्मिंदगी और नकारापन से भरे हुए हैं फिर भी सभी अपने लिए झूठा गर्व ढूढ़ लाते है। अगर सब लोग इतने ही महान थे तो हजारों साल तक यह देश अनेक विदेशी आक्रांताओं का गुलाम क्यों रहा ? आज देश आजाद है, सारी शक्ति अपने हाथ में है पर लगता है जैसे समस्याएं और बढ़ती जा रही है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, देशभक्त राजनेताओं और विद्वान युग पुरुषों ने हमारे मुल्क को समृद्ध और एक साथ रहने के लिए एक महान संविधान बना कर दिया परन्तु हम आज भी एक दुसरे से लड़ते आ रहे हैं।

आज देश में विवाद के तीन प्रमुख विषय है। आरक्षण, जाति,और पारंपरिक सत्ता। इसलिए वक्त आ गया है इनके समूल विनाश का। एक ऐसी व्यवस्था निर्मित करने की आवश्यकता है जो इन सब का अंत करके एक समृद्ध भारत का स्वप्न पूर्ण कर सके। अतः जरुरत है देश के सभी नागरिकों को आर्थिक आधार पर पहचान देने की,एक ऐसी पहचान जिसमे किसी के कुल, धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र का कोई महत्व नहीं होगा। भारत के सभी नागरिकों को आर्थिक आधार पर चिन्हित कर उनके विकास के लिए योजनाएं निर्मित होंगी और समय-समय पर उनमे संशोधन होता रहेगा। बाबा साहब ने देश की जाति समस्या पर कहा था कि 'वर्ण व्यवस्था एक ऐसी बहु मंजिला ईमारत की तरह है जिसमे कोई सीढ़ी नहीं है, जो जिस मंजिल पर पैदा होगा उसे वही मरना है। ना कोई ऊपर जा सकता है ना ही कोई नीचे आ सकता है'। परन्तु इस नागरिक श्रेणी में साल-दर-साल में श्रेणी की स्थिति में जरुरत परिवर्तन होगा। जो जैसा परिश्रम करेगा वह वैसी श्रेणी में पहुंचेगा। इस नागरिक श्रेणी का एक परिकल्पित उदाहरण स्वरुप मैंने निर्मित किया है।

श्रेणी 1 ऐसे नागरिक जिनकी सम्पत्ति एक अरब से अधिक हो

श्रेणी 2 पचास करोड़ से एक करोड़ तक

श्रेणी 3 एक करोड़ से पचास लाख तक

श्रेणी 4 पचास लाख से दस लाख तक

श्रेणी 5 दस लाख से नीचे - आरक्षण

आरक्षित वर्ग की श्रेणी 5 में दस से पांच लाख तक 5 फीसदी, पांच लाख से तीन लाख तक में 10 फीसदी, तीन से एक लाख तक में 15 फीसदी, एक लाख से नीचे तक में 25 फीसदी आरक्षण दिया जाए।

श्रेणी 5 में आने वाले नागरिकों को समाज की मूलधारा में लाने हेतु सरकार का पूरा ध्यान होना चाहिए। इन्हें ही आरक्षण, मुफ्त शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सहित सभी सुविधाओं में सामान अवसर प्रदान करने की व्यवस्था दी जानी चाहिए। भारत के सभी नागरिकों को सम्पत्ति में हिस्सा, सुविधा यहां तक कि रेलवे और हवाईजहाज की यात्रा में छूट भी इसी आधार पर प्रदान होना चाहिए। नागरिक श्रेणी के पहचान के तौर पर पांच प्रमुख रंग के प्रमाण पत्र ही नागरिकों के पहचान होंगे, इसके अतिरिक्त (कुल, धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र) उनकी कोई पहचान नहीं होगी। पहला सफ़ेद, दूसरा पीला, तीसरा हरा और चौथा नीला तथा पांचवा लाल कार्ड बना होगा। हम जानते है गांव में आज भी बस्तीयां होती हैं। पाठक बस्ती, मिसिर बस्ती, यादव बस्ती, चमार बस्ती, नाई बस्ती, जोलहा बस्ती, पंजाबी टोला , मल्लाह बस्ती, इत्यादि जो की जाति पोषक हैं। इसे समाप्त करना हैं तो कॉलोनी बनानी होगी। ए ब्लॉक, ब ब्लॉक जहां जाति धर्म के नाम पर लोग बिखरे नहीं होंगे।

जाति,मजहब के नाम पर कही कोई सामाजिक-राजनीतिक संगठन नहीं होगा (वैवाहिक विज्ञापन तक में भी इनका जिक्र नहीं होना चाहिए) किसी दुकान, मकान पर इनका इस्तेमाल नहीं होगा। टोपी, पगड़ी, चोटी लगाना अपराध नहीं होगा पर इसे धार्मिक प्रतीक नहीं माना जाएगा। अगर इनके प्रतिक के आधार पर कोई सामाजिक, राजनीतिक, संगठन बनाता हैं, दुकान मकान पर तस्वीर लगाता हैं तो यह अपराध माना जाएगा। स्कूल, संसद और कोर्ट में यह निषिद्ध होगा। शिक्षा, नौकरी, राजनीति,ठेका, सरकारी योजना इन सब कों आर्थिक आधार पर आरक्षित रखा जाएगा। किसी के पूर्वजों की जाति पूछना जघन्य अपराध होगा। अतः भारत को विकसित होना है। दुनिया से आगे निकलना है। अपने सभी सामाजिक बुराइयों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ना हैं तो एक बार इस प्रकार से सोचने की आवश्यकता है।

देश को हमे ऐसे राजनीतिज्ञों के हाथों में बिल्कुल नहीं छोड़ना चाहिए जो हमें सिर्फ धर्म और जाति के चश्मे से देखते हैं, क्योंकि हम चाहे कितनी भी दुनिया - जहां की बाते कर ले भूखे पेट को सिर्फ रोटी ही शांत कर सकती है और इसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

आस्था, भीड़ और हमारी जिम्मेदारी

तीर्थयात्रा

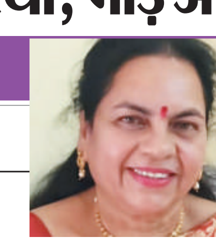

संध्या अग्रवाल
लेखक साहित्यकार हैं।

हर नया साल अपने साथ उम्मीदें लेकर आता है। कोई नए संकल्पों के साथ घर से निकलता है, तो कोई मन की थकान उतारने के लिए किसी पवित्र स्थान की ओर चल पड़ता है। शायद इसी वजह से साल के अंतिम दिनों और नए साल की शुरुआत में देश के तीर्थस्थलों पर उमड़ती भीड़ अब एक परिचित दृश्य बन चुकी है। आस्था का यह प्रवाह हर साल बढ़ता जा रहा है, लेकिन इसके साथ कई सवाल भी खड़े हो जाते हैं–क्या हमारी श्रद्धा के साथ हमारी ज़िम्मेदारी भी उतनी ही जागृत है?

अयोध्या, वाराणसी, मथुरा जैसे शहर इन दिनों केवल धार्मिक स्थल नहीं रह जाते, वे भावनाओं के संगम बन जाते हैं। हर उम्र, हर वर्ग के लोग यहाँ पहुँचते हैं–कोई मन्नत लेकर, कोई शांति खोजने, तो कोई नए साल की शुरुआत प्रभु के चरणों में करने। इस भीड़ में एक तरफ़ श्रद्धा है, तो दूसरी ओर व्यवस्थाओं की कसौटी। प्रशासन तैयारियों में जुटा है, योजनाएँ बन रही हैं, सुरक्षा इंतज़ाम किए जा रहे हैं-लेकिन भीड़ केवल प्रबंधन से नहीं संभलती, उसे समझदारी भी चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में धार्मिक पर्यटन का स्वरूप बदला है। पहले तीर्थयात्रा एक सीमित, धैर्यपूर्ण प्रक्रिया थी। अब यह तेज़ रफ्तार जीवन के बीच एक छोटा-सा विराम बन गई है। लोग कम समय में अधिक स्थान देखने की चाह रखते हैं। इसका असर यह हुआ है कि नए साल जैसे अवसरों पर कुछ तीर्थस्थलों पर श्रद्धालुओं की संख्या अचानक कई गुना बढ़ जाती है। ऐसे में सवाल उठता है–क्या हम अपनी आस्था को बोझ बना रहे हैं?

भीड़ अपने साथ सिर्फ़ कदमों की आवाज़ नहीं लाती, वह अपने पीछे ज़िम्मेदारियाँ भी छोड़ जाती है। घाटों की स्वच्छता, मंदिर परिसरों की पवित्रता, स्थानीय लोगों की दिनचर्या–सब कुछ इस दबाव में आता है। प्रशासन अपनी ओर से निगरानी, स्वास्थ्य सुविधाएँ और सुरक्षा व्यवस्था करता है, लेकिन यह प्रयास तब अधूरा रह जाता है जब श्रद्धालु स्वयं अनुशासन भूल जाते हैं।

कोरोना काल ने हमें यह सिखाया था कि भीड़ केवल असुविधा नहीं, खतरा भी बन सकती है। फिर भी समय बीतते ही हम अक्सर उस सीख को भूल जाते हैं। नए साल की उमंग में हम यह नहीं सोचते कि थोड़ी सी असावधानी किसी की यात्रा को दुखद अनुभव में बदल सकती है। धार्मिक स्थल किसी परीक्षा का केंद्र नहीं हैं, जहाँ सिर्फ़ पहुँचना ही लक्ष्य हो। वे संवेदनशील स्थान हैं, जहाँ पहुँचने से अधिक महत्वपूर्ण है–कैसे पहुँचा जाए।

धार्मिक पर्यटन का एक सकारात्मक पक्ष भी है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। स्थानीय अर्थव्यवस्था को इससे बल मिलता है। छोटे दुकानदार, नाविक, होटल कर्मचारी–अनेक परिवारों की रोज़ी-रोटी इससे जुड़ी है। लेकिन यह लाभ तभी सार्थक है, जब यह टिकाऊ हो। यदि तीर्थस्थल अव्यवस्था और अव्यवहार के शिकार हो जाएँ, तो आस्था का यह स्रोत धीरे-धीरे स्वयं कमजोर पड़ने लगता है।

नया साल हमें केवल नए कैलेंडर की तारीख़ नहीं देता, वह हमें खुद से कुछ सवाल पूछने का अवसर भी देता है। क्या हम यात्रा को केवल अपनी संतुष्टि तक सीमित रखते हैं, या दूसरों के अधिकारों का भी ध्यान रखते हैं? क्या हमारी श्रद्धा केवल दर्शन तक है, या व्यवहार में भी दिखाई देती है?

शायद अब समय है कि धार्मिक पर्यटन को केवल प्रशासनिक चुनौती नहीं, सामाजिक ज़िम्मेदारी के रूप में देखा जाए। सरकार अपनी भूमिका निभाए, यह ज़रूरी है, लेकिन उतना ही ज़रूरी है कि हर श्रद्धालु अपने भीतर यह समझ विकसित करे कि आस्था अनुशासन मांगती है, और श्रद्धा संवेदनशीलता।

इस नए साल पर यदि हम यह तय कर लें कि तीर्थयात्रा केवल पहुँचने की दौड़ नहीं होगी, बल्कि ठहराव, धैर्य और समझ का अभ्यास होगी–तो शायद हमारे पवित्र स्थल भी सुकून में सांस ले पाएँगे। भीड़ तब भी होगी, लेकिन उसमें अराजकता नहीं होगी। आस्था तब भी होगी, लेकिन वह बोझ नहीं बनेगी।

नया साल यदि हमें यह सोच दे सके, तो शायद यही उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इससे तो बेचारी दीवारों के कान ही अच्छे थे

व्यंग्य

विश्वास व्यास
लेखक व्यंग्यकार हैं।

दीवारों के भी कान होते हैं। दीवारों की एनाटॉमी न जानने के कारण यह पता नहीं है कि ये कान कैसे होते हैं? लंबे या छोटे, घुमावदार या पहलवानों जैसे टूटे फूटे! पर इतना तो पक्का है कि कान होते जरूर हैं। कई बाते बंद कमरों में होती है,बैठक गुप्त रखी जाती है। मगर दीवारों केकान इनकी आकाशवाणी कर ही देते है। हर बात जोछुपानी हो, अंततः खुले मैदान, घर मोहल्ले, चौराहे पर आ ही जाती है। पहले दीवारें कच्ची होती थी। तब के लोग सोचते थे कि शायद इसलिए दीवारों के कान भी कच्चे है। पर इधर सीमेंट के पक्के जोड़ आने के बाद भी समस्या वही की वही रही। जितनी पक्की दीवारें बनी, कान उतने कच्चे होने लगे। शायरों ने चीख चीख कर कहा, बात निकलेगी तो दूर तलक जाएगी। वे नहीं जानते थे कि बात वही कीवही थी। पर बातों के दूर जाने का हाइवे दीवारों में छिपे कानों से निकलता था। आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर भी इसी कान दर्द से दुखी थे। वे खुलकर किसी से बात नहीं कर पातेथे। तभी तो उन्होंने लिखा 'बात करनी,मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी!' आगे बढ़ते विज्ञान ने बाकी सारे लीकेज ठीक कर सीसीटीवी फुटेज देखे कि वहां मेरे आसपास कौन था? पर हैरत की वहां दूर तक कोई नजर नहीं आया। मै टेलीपैथी, माइंड रीडिंग से लेकर कर्ण पिशाचिनी तक की संभावनाएं तलाशने लगा था। तभी मुझे परेशान

देखकर किसी सयाने ने बताया कि 'भैया ये जो मोबाइल है न! ये आपकी हर बात सुन रहा है।' तब से मैं परेशान घूम रहा हूं। जेब में मोबाइल रखे रखे, मैं पता नहीं क्या क्या, कैसी कैसी बातें, कह चुका हूं। सोचकर जी घबरा रहा है कि वे सारी बाते इंटरनेट के ब्रह्मांड में चक्कर लगा रही है। दीवारों के कान से बचने के चक्कर में मै अपनी बात मोबाइल केकानों में कह गया हूं। कुएं से निकल कर खाई में गिरना इसी को कहते है। इससे तो बेचारी दीवारों के कान ही अच्छे थे। कम से कम बात आसपास तो रहती थी। मोबाइल ने दीवार सेउसके कान छीन लिए है। आप जानते ही है कि बंद मुट्ठी लाख की और खुली मुट्ठी खाक की होती है। लाखों के मोबाइल से दुनिया को मुट्ठी में करने के चक्कर में अपनी बात की मुट्ठी खुल चुकी है। मेरी खुली मुट्ठी की खाक दुनिया भर में उड़ रही है। सुनते थे कि एक फरिश्ता जिब्राइल है जो हमारे कहे सुने का हिसाब रखता है। पर कलयुग में हमने मोबाइल बना लिया है, जो हमारा हिसाब यही कर रहे।

नए साल का संकल्प

राज कुमार सिन्हा

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

प्रकृति से कम लो, उसे अधिक लौटाओ

वैश्विक आर्थिक वृद्धि की पृष्ठभूमि देखा जाए तो 1950 से पहले धीमी औद्योगीकरण तक सीमित था। 1950 से 2020 के जीडीपी में 10 गुना वृद्धि आया जो बड़े पैमाने पर उद्योग, खनन, तेल-कोयला, शहरीकरण के कारण हुआ है। 2020 से 2025 तक जीडीपी निरंतर बढ़ती है। लेकिन पर्यावरणीय संकट चरम पर पहुंच जाता है। हम ग्रह के संसाधनों को जितनी तेज़ी से समाप्त कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक तेज़ी से उपयोग कर रहे हैं। चूंकि प्रकृति मुफ़्त है, हम अक्सर इसे हल्के में लेते हैं और इसका अत्यधिक दोहन करते हैं। हम जंगलों को साफ़ करते हैं, समुद्रों में ज़रूरत से ज़्यादा मछलियां पकड़ते हैं, नदियों को प्रदूषित करते हैं और आद्रभूमि पर निर्माण करते हैं, बिना यह सोचे कि इसका क्या असर होगा। मनुष्य अपनी सुविधाओं और भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए जंगल काटता है, खनिजों का अत्यधिक दोहन करता है, नदियों को प्रदूषित करता है। यह लालच प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर रहा है।

प्राकृतिक दुनिया एक अद्भुत आश्चर्य है जो हम सभी को प्रेरित करती है। यह हमारी अर्थव्यवस्था, हमारे समाज और यहां तक कि हमारे अस्तित्व का आधार है। हमारे जंगल, नदियां, समुद्र और मिट्टी हमें भोजन, सांस लेने की हवा और अपनी फसलों की सिंचाई के लिए पानी प्रदान करते हैं। इन प्राकृतिक संपत्तियों को अक्सर दुनिया की 'प्राकृतिक पूंजी' कहा जाता है। ये लाभ अर्थव्यवस्था के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है, खेती और वानिकी से लेकर मनोरंजन और पर्यटन तक। विश्व की आर्थिक तरक्की ने पिछले 50 से 70 वर्षों में उत्पादन, व्यापार, और तकनीकी विकास को तेज़ किया है। लेकिन इस तरक्की की पर्यावरणीय कीमत भारी है। यह कीमत वायु, जल, मिट्टी, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में दिखाई देती है।

वैश्विक आर्थिक वृद्धि की पृष्ठभूमि देखा जाए तो 1950 से पहले धीमी औद्योगीकरण तक सीमित था।1950 से 2020 के जीडीपी में 10 गुना वृद्धि आया जो बड़े पैमाने पर उद्योग, खनन, तेल-कोयला, शहरीकरण के कारण हुआ है। 2020 से 2025 तक जीडीपी निरंतर बढ़ती है। लेकिन पर्यावरणीय संकट चरम पर पहुंच जाता है। हम ग्रह के संसाधनों को जितनी तेज़ी से समाप्त कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक तेज़ी से उपयोग कर रहे हैं। चूंकि प्रकृति मुफ़्त है, हम अक्सर इसे हल्के में लेते हैं और इसका अत्यधिक दोहन करते हैं। हम जंगलों को साफ़ करते हैं, समुद्रों में ज़रूरत से ज़्यादा मछलियां पकड़ते हैं, नदियों को प्रदूषित करते हैं और आद्रभूमि पर निर्माण करते हैं, बिना यह सोचे कि इसका क्या असर होगा। मनुष्य अपनी सुविधाओं और भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए जंगल काटता है, खनिजों का अत्यधिक दोहन करता है, नदियों को प्रदूषित करता है। यह लालच प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर रहा है। विकास की अंधी दौड़ में हमने उद्योग, शहरीकरण और उपभोग को इतना बढ़ा दिया कि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया, हवा, पानी, मिट्टी सब प्रदूषित हो गए। लालच ने हमें जंगलों को जलाने, कोयला और पेट्रोलियम जैसे ईंधनों पर निर्भर बना दिया, जिससे ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियर पिघलना, और अत्यधिक मौसम परिवर्तन जैसी आपदाएं बढ़ रही है। जब हम प्रकृति को केवल 'संसाधन' मानते

हैं, तो उसे नष्ट करना आसान लगता है। जब उसे 'मां' मानते हैं, तो उसकी रक्षा स्वाभाविक हो जाती है।

अगर हम अपने समाज और अर्थव्यवस्था के लिए प्रकृति के महत्व को समझना शुरू कर दें, तो हम अल्पकालिक लाभ के लिए प्रकृति को नष्ट करने के बजाय, उसके साथ सामंजस्य बिठाकर रहने के महत्व को समझेंगे। प्रकृति से हमें अपनी आवश्यकतानुसार ही लेना चाहिए और उसे लौटाने का भी प्रयास करना चाहिए। यह संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है ताकि भावी पीढ़ियों के लिए भी संसाधन उपलब्ध रहें। प्रकृति हमें जीने के लिए मूलभूत चीजें देती है, जैसे पीने का पानी, सांस लेने के लिए हवा और खाने के लिए भोजन।हमें अपनी आवश्यकताओं के लिए ही संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। जैसे, केवल उतना पानी लें जितना आवश्यक हो और केवल उतनी ही लकड़ी काटें जितनी जरूरत हो। हमें जितना संभव हो, उतना प्रकृति को वापस देना चाहिए। जैसे, अगर हम एक पेड़ काटते हैं, तो हमें उसकी जगह एक और पेड़ लगाना चाहिए। प्रकृति से लेना और उसे लौटाना एक संतुलित प्रक्रिया है, जिसमें हमें केवल अपनी जरूरत के अनुसार ही लेना चाहिए और बदले में उसका सम्मान, संरक्षण और पुर्नस्थापन करना चाहिए। 'कम से कम लेना और ज्यादा से ज्यादा देना' सतत विकास का मूल दर्शन है, ऐसा विकास जो पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था तीनों के संतुलन से हो। प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीना कोई आधुनिक विचार नहीं है। आदिवासी समुदाय पीढ़ियों से ऐसा करते आए हैं। उन्होंने धरती को रोज़मर्रा की जिंदगी से अलग नहीं किया। वे लय, ऋतुओं और चक्रों को समझते थे। उन्होंने जो ज़रूरी था, उसे लिया और पीछे पर्याप्त छोड़ गए। यह सिर्फ़ ज्ञान नहीं है,यह एक निर्देश है। अगर हम इस पर ध्यान दें तो समझदारी होगी। यदि हममें से अधिक लोग अपनी गति धीमी कर दें,सोच-समझकर उपभोग करें, स्थानीय कारीगरों का समर्थन करें, तथा संसाधनों को पवित्र मानें और यह संसाधन अनंत नहीं है,तो हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकेंगे जो आगे बढ़ाने लायक होगा।एक धारणा यह है कि हम प्रकृति को बचाने के लिए यहां हैं। लेकिन असल मुद्दा यह नहीं है। प्रकृति को किसी बचाव अभियान की नहीं, बल्कि साझेदारी की ज़रूरत है।

हम अपने मूल्यों को कैसे व्यक्त करते हैं,जो हम खरीदते हैं, उससे हमारे विश्वासों का पता चलता है। जब आप हस्त निर्मित पर्यावरण के प्रति जागरूक वस्तुओं का चयन करते हैं, तो आप एक लेन-देन से कहीं अधिक का समर्थन कर रहे होते हैं। आप समुदायों, संस्कृतियों और संरक्षण का समर्थन कर रहे होते हैं।

युरोपीयन कमिशन के एक रिपोर्ट के अनुसार मानवीय गतिविधियों ने ग्रह को छठी बार सामूहिक विलुप्ति की ओर धकेल दिया है, जिससे अब दस लाख प्रजातियां खतरे में हैं ।

पिछले 50 वर्षों में आधे से अधिक पक्षी, स्तनधारी, सरीसृप, उभयचर और मछलियां लुप्त हो चुकी हैं। दुनिया भर में विलुप्त होने की दर अब मानव-पूर्व काल की तुलना में 100 से 1000 गुना अधिक है, जो डायनासोर के विलुप्त होने के बाद से सबसे बड़ी विलुप्ति घटना है। इससे हमारी खाद्य और जल सुरक्षा को खतरा है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ख़तरे में डालता है। हमारी अर्थव्यवस्थाओं को कमजोर करता है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रति लचीलेपन का खतरा बढ़ाता है। जब मानवता की संसाधन खपत पृथ्वी की वर्ष भर में उन संसाधनों को पुनर्जीवित करने की क्षमता से अधिक हो गई है, जो इस बात का स्मरण कराता है कि आधुनिक उपभोग पद्धतियां कितनी असंवहनीय है तथा किस प्रकार ये हमारे ग्रह के पारिस्थितिकी तंत्र पर अत्यधिक दबाव डाल रही हैं। वर्तमान में भारत को अपनी आबादी की मांग को पूरा करने के लिए अपने संसाधनों की 2.6 गुना करने की जरूरत है, जिसके कारण जंगलों का नाश हो रहा है, जैव विविधता कम हो रही है और जलवायु में तेजी से बदलाव आ रहा है। 1.4 अरब से ज्यादा की आबादी वाला भारत, जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती खपत के कारण कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। क्या हमलोग ऐसा लक्ष्य बना सकते हैं जब हमारी मांगें धरती के द्वारा प्रदान की जा सकने वाली मांगों से मेल खाए ?

स्वागत 2026

मनीषा मंजरी

लेखक स्तंभकार हैं।

नए साल के संकल्प : उत्साह से निरंतरता तक

बीते साल के आख़री पड़ाव को लांघ कर जब हम नए साल में प्रवेश करते हैं, तो नया साल हमारे समक्ष उम्मीदों की नयी डायरी खोल कर बैठता है। जैसे हीं घड़ी सुइयां रात के बारह बजाती हैं, हम बीते साल की थकान, असफलताओं और अधूरे सपनों को पीछे छोड़ देने का संकल्प ले लेते हैं। मन में एक दृढ़ विश्वास जन्म लेता है कि यह साल, बीते साल से बेहतर और अलग होगा। हम कई तरह के संकल्प लेते हैं, और अंश में होता है, खुद को सुधारना, जीवन को नई दिशा देना, और अपने भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानने का एक प्रयास।

साल के शुरआती दिनों में हमारा संकल्प, उत्साह की चरम सीमा पर होता है। ठिठुराती ठण्ड भी इस जोश को कम नहीं होने देती। ना सुबह जल्दी उठना हीं कठिन लगता है, ना हीं नियमित व्यायाम परेशान करती है, नयी आदतें सहज सी लगने लगती हैं, और अपने अन्य लक्ष्यों के पीछे भी हम तीव्र गति से भागते हैं। हम अपने स्वास्थ्य, करियर, रिश्तों और आत्म-विकास से जुड़े संकल्प पूरे विश्वास के साथ अपनाते हैं। सोशल मीडिया पर स्क्रोल करते प्रेरक पोस्ट और लक्ष्य सूची इस उत्साह को और बढ़ा देती हैं। और लगता है जैसे इस बार बदलाव निश्चित है।

लेकिन बढ़ते समय वास्तविकता अपने धरातल को छूती है। रोजमर्रा की जिम्मेवारियां, काम का दवाब, मानसिक व शारीरिक थकान और साथ हीं वो पुरानी आदतें फिर से अपनी जगह बनाने लगती हैं। दस से बीस दिन नहीं होते कि हममें से कई लोग संकल्पों से समझौते करने लगते हैं। इसे हम असफलता नहीं, बल्कि मानवीय स्वभाव का हिस्सा कह सकते हैं। समस्या लिए गए संकल्पों में नहीं होती, बल्कि उन्हें निभाने की रणनीति में होती है।

अक्सर हम नए साल के उत्साह से वशीभूत होकर बहुत बड़े और कठोर लक्ष्य तय कर लेते हैं। अचानक से उस जीवन शैली को बदलने की कोशिश करते हैं, जिसे हम सालों से बंधे बैठे हैं। ऐसी परिस्थिति में जब अपेक्षाएँ हकीकत से टकराती हैं, तो निराशा जन्म लेती है। जिसके परिणामस्वरूप उत्साह धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और हम खुद को दोषी की तरह देखने लगते हैं।

कोई भी परिवर्तन एक दिन में सींची धरा का परिणाम नहीं होता। वास्तविक परिवर्तन के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है। छोटे-छोटे कदम, रोज़ की मामूली कोशिशें और स्वयं के प्रति धैर्य, यही सब संकल्पों को जीवित रखते हैं। यदि कोई दिन लक्ष्य से चूक भी जाए, तो उसे अंत मान लेने के बजाय अगले दिन फिर से शुरुआत करना ही सफलता के शिखर की दिशा में ले जाता है।

नए साल के संकल्प सिर्फ एक बाह्य गतिविधि नहीं, ये सिर्फ बाहरी बदलाव से संभव नहीं है अपितु ये आंतरिक संवाद का भी हिस्सा होते हैं। स्वयं से ईमानदारी, अपनी सीमाओं की स्वीकृति और आत्म-करुणा हमारे संकल्पों को मजबूत बनाती है। जब हम खुद को अच्छे से समझते हैं, तब ये संकल्प बोझ नहीं, बल्कि आत्म-विकास का माध्यम बन जाते हैं।

ये समझना आवश्यक है कि बदलाव किसी तारीख का मोहताज नहीं होता। नया साल हमें सिर्फ़ यह याद दिलाता है कि शुरुआत कभी भी की जा सकती है। संकल्प तभी सार्थक होते हैं, जब हम उन्हें साल भर निभाने का साहस रखते हैं, न कि सिर्फ़ जनवरी या फरवरी तक। नए साल के ये नए संकल्प कोई परफेक्ट बनने का वादा नहीं है, बल्कि बेहतर बनने की एक नित्य प्रक्रिया है। अगर कभी संकल्प गिर जाए, तो उसे फिर से उठाना ही असली जीत है। उत्साह क्षणिक हो सकता है, लेकिन निरंतरता हीं स्थायी परिवर्तन की नींव रखती है। नया साल हमें खुद पर विश्वास रखना सिखाता है और साथ हीं ये संदेश देता है कि कोशिशें कभी बंद नहीं होनी चाहिए।

नववर्ष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

यह परिवर्तन स्वयं से संवाद का क्षण

आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम सब से बातें करते हैं, पर स्वयं से बात करने का समय नहीं निकाल पाते। नववर्ष का आगमन इस कमी को पूरा करने का अवसर देता है। स्वयं से संवाद का अर्थ है अपने मन, अपने विचारों, अपनी इच्छाओं और अपनी कमजोरियों को ईमानदारी से देखना। यह संवाद कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और सच्चा सामना है। जब हम स्वयं से प्रश्न करते हैं कि हमने बीते वर्ष में क्या पाया, क्या खोया और क्या अधूरा रह गया, तब हमारे भीतर छिपे सत्य धीरे-धीरे सामने आने लगते हैं। यह संवाद हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है, जो अक्सर समाज, अपेक्षाओं और भूमिकाओं के आवरण में छिप जाता है।

नूतन वर्ष हम सभी के लिए एक खूबसूरत मौका होता है, जो हम सभी को एक नवीन शुरुआत करने के लिए प्रेरित करता है। हमेशा याद रखें कि पिछ्ले साल के दुःख के लिए इस साल कोई आंसू बर्बाद करने की जरूरत नहीं होती है । नव वर्ष एक ऐसा उत्सव है जो पूरी दुनिया में मनाया जाता है। नव वर्ष दुनिया भर में अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। इस नए साल में हर इंसान खुद को अपने - अपने तरीक़े से बदलने का प्रयास करता है और पुराने साल के बुरे वक्त को भुला कर नए साल के नए सूर्योदय में नयी शुरुआत करने का प्रयास करता है।

आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम सब से बातें करते हैं, पर स्वयं से बात करने का समय नहीं निकाल पाते। नववर्ष का आगमन इस कमी को पूरा करने का अवसर देता है। स्वयं से संवाद का अर्थ है अपने मन, अपने विचारों, अपनी इच्छाओं और अपनी कमजोरियों को ईमानदारी से देखना। यह संवाद कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और सच्चा सामना है। जब हम स्वयं से प्रश्न करते हैं कि हमने बीते वर्ष में क्या पाया, क्या खोया और क्या अधूरा रह गया, तब हमारे भीतर छिपे सत्य धीरे-धीरे सामने आने लगते हैं। यह संवाद हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है, जो अक्सर समाज, अपेक्षाओं और भूमिकाओं के आवरण में छिप जाता है।

स्वयं से संवाद का अगला चरण आत्ममंथन है। आत्ममंथन का अर्थ केवल गलतियों पर पछतावा करना नहीं, बल्कि पूरे वर्ष के अनुभवों को गहराई से समझना है। सफलता ने हमें क्या सिखाया और असफलता ने हमें कितना मजबूत बनाया- इन प्रश्नों के उत्तर आत्ममंथन से ही मिलते हैं। यह प्रक्रिया दूध से मक्खन निकालने जैसी है, जहाँ अनुभवों के समुद्र से जीवन का सार निकाला जाता है। आत्ममंथन हमें यह समझने में मदद करता है कि कौन-से निर्णय सही थे, कौन-से भावनात्मक आवेग

हमें भटका ले गए और किन मूल्यों ने हमें कठिन समय में संभाले रखा। इस समझ के बिना नववर्ष के संकल्प केवल खोखले शब्द बनकर रह जाते हैं।

आत्ममंथन का एक महत्वपूर्ण आयाम आत्मस्वीकृति है। अक्सर हम अपने दोषों से भागते हैं और अपनी कमजोरियों को छिपाने का प्रयास करते हैं। नववर्ष का समय हमें यह सिखाता है कि आत्मनिर्माण की शुरुआत आत्मस्वीकृति से होती है। स्वयं को जैसा है वैसा स्वीकार करना कमजोरी नहीं, बल्कि साहस का परिचायक है। जब हम यह मान लेते हैं कि हम पूर्ण नहीं हैं, तभी हम बेहतर बनने की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। आत्मस्वीकृति हमें अपराधबोध से मुक्त करती है और आत्मविश्वास की नींव रखती है। यह स्वीकार्यता हमें दूसरों के प्रति भी अधिक सहिष्णु और संवेदनशील बनाती है।

आत्ममंथन और आत्मस्वीकृति के बाद आत्मनिर्माण की यात्रा आरंभ होती है। आत्मनिर्माण का अर्थ केवल बाहरी उपलब्धियों को बढ़ाना नहीं, बल्कि भीतर के मनुष्य को गढ़ना है। यह यात्रा विचारों के परिष्कार से शुरू होकर आचरण के परिवर्तन तक जाती है। नववर्ष में लिया गया संकल्प यदि केवल लक्ष्य-केन्द्रित हो, तो वह सीमित रह जाता है, लेकिन यदि वह मूल्य-केन्द्रित हो, तो जीवन की दिशा बदल सकता है। आत्मनिर्माण में अनुशासन, धैर्य और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। यह एक दिन या एक महीने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि पूरे वर्ष चलने वाली साधना है, जिसमें छोटे-छोटे सुधार मिलकर बड़े परिवर्तन का रूप लेते हैं।

नववर्ष के साथ संकल्प लेने की परंपरा जुड़ी हुई है, परंतु अधिकांश संकल्प कुछ ही दिनों में टूट जाते हैं। इसका कारण यह है कि हम संकल्प लेते समय यथार्थ से अधिक कल्पना में जीने लगते हैं। आत्मनिर्माण की दृष्टि से संकल्प वही सार्थक होते हैं जो हमारी क्षमताओं, परिस्थितियों और मूल्यों के अनुरूप हों। स्वयं से संवाद हमें यह समझने में मदद करता है कि हमें क्या बदलना है और कितना बदलना संभव है। छोटे, व्यवहारिक और स्पष्ट संकल्प आत्मनिर्माण की प्रक्रिया को मजबूत बनाते हैं। ऐसे संकल्प हमें निराश नहीं करते, बल्कि हर छोटे प्रयास पर संतोष और ऊर्जा प्रदान करते हैं।

आत्मनिर्माण की यात्रा केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, उसका प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। जब एक व्यक्ति अपने भीतर सकारात्मक परिवर्तन लाता है, तो उसका व्यवहार, उसकी भाषा और उसका दृष्टिकोण दूसरों को भी प्रभावित करता है। नववर्ष का आत्ममंथन हमें यह समझाता है कि हम समाज का हिस्सा हैं और हमारी जिम्मेदारियाँ केवल स्वयं तक सीमित नहीं हैं। संवेदनशीलता, करुणा और सहयोग जैसे मूल्य आत्मनिर्माण के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन मूल्यों के साथ किया गया आत्मविकास समाज में सौहार्द्र और विश्वास को मजबूत करता है।

नववर्ष की सबसे बड़ी देन आशा है। यह आशा हमें यह विश्वास दिलाती है कि परिवर्तन संभव है और भविष्य को बेहतर बनाया जा सकता है। आत्ममंथन हमें अतीत से सीखने की क्षमता देता है, जबकि आत्मनिर्माण हमें भविष्य को आकार देने की शक्ति प्रदान करता है। आशा के बिना संकल्प निर्जीव हो जाते हैं और प्रयास दिशाहीन। नववर्ष का संदेश यही है कि चाहे बीता हुआ वर्ष जैसा भी रहा हो, आने वाला वर्ष नई संभावनाओं से भरा है, बशर्ते हम उसे सजगता और आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करें।

यह नववर्ष एक बाहरी उत्सव से अधिक भीतर की यात्रा का उत्सव है। यह स्वयं से संवाद करने, आत्ममंथन द्वारा अनुभवों को समझने और आत्मनिर्माण के माध्यम से स्वयं को बेहतर गढ़ने का अवसर देता है। जब हम नववर्ष को इस दृष्टि से देखते हैं, तब यह केवल एक तारीख नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक दिशा देने वाला क्षण बन जाता है। सच्चा नववर्ष वही है, जहाँ मनुष्य अपने भीतर झांककर स्वयं को पहचानता है और हर दिन थोड़ा-सा बेहतर बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ता है। यही आत्ममंथन से आत्मनिर्माण की सच्ची और सार्थक यात्रा है। एडीथ पियर्स कहते है- 'नया साल एक खाली पन्नो की किताब की तरह खड़ा है, अब यह हमारे ऊपर है हम उस पहले पन्ने पर क्या लिखेंगे। इस किताब को अवसर कहते हैं और पहला पन्ना पहला दिन है।'

60 करोड़ में जेल परिसर निर्माण के बदले 600 करोड़ की जमीन लेने वाली एमराल्ड हेरिटेज की होगी जांच

कलेक्टर के आदेश पर एसडीएम ने 9 अधिकारियों का दल किया गठित

बैतूल। पुर्नघनत्वीकरण नीति 2018 के तहत बैतूल के जेल प्रोजेक्ट पर लगातार सवाल उठ रहे थे। वहीं इस प्रोजेक्ट में कढ़ाई में नवीन जेल परिसर निर्माण 60 करोड़ में किया जा रहा है और इसके बदले वर्तमान जेल परिसर की करीब 6 एकड़ जमीन दी जा रही है, जिसका बाजार मूल्य लगभग 600 करोड़ रुपए आंका जा रहा है। वर्तमान जेल परिसर में जो जमीन पुर्नघनत्वीकरण नीति में दी गई है, वहां पर एमराल्ड हेरीटेज नामक फर्म कॉलोनी डेवलप कर फ्लैट, दुकानें आदि बनाकर बेचेगी। इस एमराल्ड हेरिटेज को लेकर लगातार सवाल उठते रहें है। ऐसी स्थिति में कलेक्टर के आदेश पर बैतूल एसडीएम ने एमराल्ड हेरीटेज को लेकर तथ्यात्मक जांच हेतु 9 सदस्यीय जांच दल गठित किया है, जो सात दिनों में अपनी जांच रिपोर्ट देगा। इस संबंध में जब हमने एमराल्ड हेरिटेज के कर्ताधर्ताओं से संपर्क करने की कोशिश की, तो उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

यह अधिकारी है जांच दल में...

तहसीलदार बैतूल नगर पूनम साहू, नपा सीएमओ बैतूल सतीश मटसेनिया, सहायक संचालक टीएनसीपी विनोद परस्ते, रेंजर बैतूल रेंज एपी शुक्ला, सहायक यंत्री हाउसिंग बोर्ड प्रकाश पंजवानी, सहायक यंत्री नपा बैतूल नीरज धुर्वे, उपयंत्री नपा बैतूल नागेंद्र वागद्रे, आरआई भीमराव पोटफोडे और सुखराम सिरसाम को रखा गया है।

इनका कहना है –

जिला कार्यालय से प्राप्त पत्र के आधार पर 9 सदस्य जांच दल गठित किया गया है। जो शिकायती भूमि पर पेड़ की अवैध कटाई तथा एक व्यक्ति द्वारा भूमि स्वामी होने संबंधी जो दावा किया गया है, उसकी जांच सहित अन्य जो भी तथ्य सामने आते हैं, उनकी विधिवत मय रिकॉर्ड के जांच कर जांच समिति तीन दिवस में कलेक्टर को रिपोर्ट सौपेगी।

– डॉ. अभिजीत सिंह,
एसडीएम बैतूल

इन तथ्यों पर होगी जांच..

1. एमराल्ड हेरिटेज को जो कॉलोनी विकास की अनुज्ञा दी गई, वह क्या नियम अनुकूल है ?
2. एमराल्ड हेरिटेज को जो विभिन्न विभागों से अनुमतियां प्रदान की गई है, क्या वह सभी नियम के अनुकूल है ?
3. जेल प्रोजेक्ट में कढ़ाई और वर्तमान जेल परिसर में जो पेड़ काटे गए, क्या उनकी अनुमति विधि और नियम के अनुसार है ?
3. पुर्नघनत्वीकरण नीति के विपरीत शहर की जमीन के बदले गांव की जमीन देकर निर्माण कराया जाना, क्या जायज है ?
5. कढ़ाई में नवीन जेल परिसर निर्माण में पंचायत के जो तालाब और अन्य संपत्ति प्रभावित हुई है, उसमें क्या क्षतिपूर्ति या कार्रवाई हुई ?
6. वर्तमान जेल परिसर से वर्तमान में कितनी जमीन एमराल्ड हेरिटेज को रजिस्ट्री कर आवंटित की गई और एमराल्ड हेरिटेज ने कितनी जमीन पर कॉलोनी विकास की अनुज्ञा, रेरा और टीएनसीपी से ली है, क्या यह नियम अनुसार है ?
7. जेल प्रोजेक्ट में भू राजस्व संहिता और सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन का क्या उल्लंघन हुआ है ?

वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश जिला धार के वर्ष 2026 के वार्षिक कैलेंडर का विमोचन हुआ

धार। वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश जिला धार के वर्ष 2026 के वार्षिक कैलेंडर का विमोचन का कार्यक्रम श्री श्वेतांबर जैन धर्मशाला धार पर 31 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश के प्रदेश महामंत्री और धार संभाग प्रभारी निर्मल अग्रवाल इंदौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रदेश उपाध्यक्ष अनंत अग्रवाल एवं महेश माहेश्वरी,प्रदेश मंत्री योगेश अग्रवाल,जिलाध्यक्ष आशीष गोयल, नगर अध्यक्ष कैलाश लाड़,महिला जिला अध्यक्ष रेखा मेहता और महिला संभागीय अध्यक्ष सरोज सोनी मंचासीन रहे।

स्वागत भाषण जिलाध्यक्ष आशीष गोयल ने दिया। संचालन जिला महामंत्री प्रवीण गुप्ता एवं आभार प्रदर्शन नगर अध्यक्ष कैलाश लाड़ ने किया। प्रदेश महामंत्री और धार संभाग प्रभारी निर्मल अग्रवाल ने कैलेंडर की विशेषताओं और उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर संरक्षकगण नरेश गंगवाल, प्रेम नारायण सुगंधी, स्वयं प्रकाश सोनी, विनय छाबड़ा, जिला प्रभारी विजय मेहता,गोपालदास गुप्ता, गोपाल राठी,श्याम खंडेलवाल,सतीश अग्रवाल जीजा, डॉ पीसी जैन, जीतेन्द्र जैन,शैलेश नेमा, राजेश अग्रवाल, अनिल जैन,प्रमोद टोंग्या, अतुल जैन तथा महिला इकाई की जिला प्रभारी रतन माला सुगंधी, ब्रजलता विजयवर्गीय,वैजयंती माला नाहर, किरण बाफना, पायल गोयल,सुनीता अग्रवाल,अर्चना खंडेलवाल, वर्षा अग्रवाल, कुसुम अग्रवाल, शोभा टोंगिया, विभा जैन, सरिता जैन,नीलम पगारिया, सुनीता पहाड़िया, मंजू गोधा, सारिका लाड़,सरिता चौधरी, प्रियंका सुगंधी आदि वैश्य बंधु एवं मातृशक्ति एवं धार के वैश्य घटकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

गुरु गोविंद सिंह बस्ती ने विशाल हिंदू सम्मेलन हेतु निकाली शोभायात्रा

धार। हिंदू धर्म की एकता,अखंडता एवं सामाजिक समरसता हेतु गुरु गोविंद सिंह बस्ती धार नगर का विशाल हिंदू सम्मेलन धारेश्वर मंदिर प्रांगण में 4 जनवरी को आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विषयों पर चर्चा होगी जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदू समाज को एकजुट करना है। इस सम्मेलन को सफल बनाने के उद्देश्य शुक्रवार शाम एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। शोभायात्रा 4:30 बजे धारेश्वर मंदिर प्रांगण में भगवान

धारेश्वरमहादेव,भारत माता, व भगवान श्री राम के चित्र पर पूजन पश्चात प्रारंभ होकर नानेवाडी, बोहराबाखल,मारुति पूरा,शनि गली,आनंद चौपाटी,पिपलीबाजार,रघुनाथपुरा, अग्रसेन चौक धान मंडी,कश्यप भवन,हटवाड़ा,पिपली बाजार,कृष्ण मंदिर,रासमंडल चौराहा, शनिगली बढ़वाली चौकी होकर धारेश्वर मंदिर प्रांगण में संपन्न हुई।

पूरे मार्ग में भगवा झंडो और जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो गया। कई स्थानों पर लोगों ने पुष्प वर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया। शोभायात्रा में गुरु गोविंद सिंह बस्ती आयोजन समिति के सहसंयोजक नरेश राजपुरोहित एवं कैलाश पिपलोदिया,दीपक जिंदल,राम मित्तल, गोपाल शर्मा, विष्णु शास्त्री अंशुल राजपुरोहित, प्रवीण गोधा,,दिलीप पटोदिया,शरद विजयवर्गीय, ज्ञानेंद्र त्रिपाठी,विष्णु राठौर, अभिषेक वैध, चेतन शर्मा, लक्की सिसोदिया,किशन द्विवेदी, अजय ठाकुर, अविनाश शर्मा,सनातनी बंधु एवं मातृशक्ति बड़ी संख्या में मौजूद रहे। जानकारी हिंदू उत्सव समिति गुरु गोविंद सिंह बस्ती के मीडिया प्रभारी ज्ञानेंद्र त्रिपाठी ने दी।

जल संकट में बोरी बंधान कर रहे संजीवनी बूटी का काम : मधु चौहान

धारूल में बोरी बंधान कर किया जल संचयन अभियान का समापन

बैतूल। मध्य प्रदेश जन अभियान आठनेर के निर्देशन में 15 नवंबर से 30 दिसंबर तक मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम आठनेर के छात्र-छात्राओं, ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों एवं नवांकुर संस्थाओं द्वारा विकासखंड के चयनित स्थानों पर बोरी बंधान एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया गया। इस आशय की जानकारी देते हुए मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड आठनेर की विकासखंड समन्वयक मधु चौहान ने ग्राम धारुल की नदी पर किए गए बोरी बंधान में उपस्थित लोगों के समक्ष कहा कि जल की कीमत का महत्व हम सभी लोगों को समझना चाहिए। जल का विवेकपूर्ण उपयोग ही जल का संवर्धन है और यह कार्य जन जागरूकता से ही संभव है। हम जल बचाने के छोटे-छोटे प्रयासों से यह असंभव से लगने वाले कार्य को संभव कर सकते हैं। इसके अंतर्गत बोरीबंधान एक

सरल,सहज और सस्ता उपाय है। जल संकट में बोरी बंधान संजीवनी बूटी का कार्य कर रहे हैं। सेक्टर कांवला की नवांकुर संस्था सतपुड़ा पर्यावरण समिति आठनेर के अध्यक्ष सतीश ठाकरे ने कहा कि पानी के प्रति यदि अभी सजग नहीं हुए तो आने वाले समय में जल संकट विकराल रूप ले सकता है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल को अधिक से अधिक रोकना, भू-जल स्तर को बढ़ाना और भविष्य की पीढयिों के लिए जल संसाधनों को सुरक्षित करना है। उन्होंने कहा कि अनियंत्रित जल दोहन, वर्षा जल का बह जाना और बढ़ती आबादी के कारण पानी की समस्या लगातार गहराती जा रही है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए व जल के प्रति अभी भी सचेत नहीं हुए तो आने वाले समय में हम सभी को इसके भयंकर परिणाम भुगतने होंगे।

ताप्ती तट से प्रारंभ हुई संपूर्ण ताप्ती परिक्रमा यात्रा

तीन प्रदेश 63 दिन में मां ताप्ती का संदेश पहुंचा कर होगा यात्रा समापन

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी मुलताई स्थित श्री क्षेत्र ताप्ती मंदिर से प्रतिवर्ष निकलने वाली मां ताप्ती संपूर्ण परिक्रमा यात्रा का शुभारंभ गुरुवार को विधि-विधान और धार्मिक उत्साह के साथ किया गया। प्रात्काल बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं परिक्रमा यात्री गाजे-बाजे के साथ ताप्ती मंदिर पहुंचे, जहां मां ताप्ती की पूजा-अर्चना के पश्चात पदयात्रा सूर्यकुंड होते हुए अपने गंतव्य की ओर रवाना हुई। पदयात्रा के नगर से गुजरने के दौरान जगह-जगह श्रद्धालुओं द्वारा मां ताप्ती रथ पर पुष्प वर्षा की गई तथा भव्य स्वागत किया गया। यात्रा में हजारों की संख्या में महिला एवं पुरुष श्रद्धालु शामिल हुए। नगर के विभिन्न क्षेत्रों में

श्रद्धालुओं ने रथ में विराजित मां ताप्ती एवं पावन ताप्ती जल कलश की पूजा-अर्चना की। नागरिकों द्वारा पदयात्रियों पर पुष्प वर्षा कर उनका अभिनंदन किया गया। मां ताप्ती के उद्गम स्थल से निकलने वाली इस परिक्रमा यात्रा को आज नगर में पर्व के रूप में मनाया जाता है। प्रारंभ में यह यात्रा छोटे स्वरूप में होती थी, जो अब विशाल धार्मिक आयोजन का रूप ले चुकी है। वर्तमान में इसकी तैयारियां लगभग 15 दिन पूर्व से प्रारंभ हो जाती हैं। प्रचार-प्रसार, व्यवस्थाओं एवं मार्ग नियोजन को लेकर बैठकों का दौर चलता है। इस वर्ष भी यात्रा के आवाहान हेतु एक दिन पूर्व ध्वज यात्रा निकाली गई। शिक्षक संघ द्वारा सभी पदयात्रियों का पंजीयन किया गया तथा पहचान पत्र प्रदान किए गए। इसके साथ ही क्रिश्चियन मेमोरियल हॉस्पिटल के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा यात्रा में शामिल पदयात्रियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

तीसरे पड़ाव की ओर रवाना हुई परिक्रमा यात्रा– ताप्ती मंदिर से निकली परिक्रमा यात्रा का प्रथम पड़ाव मरही माता मंदिर रहा, जहां मंदिर समिति द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत कर श्रद्धालुओं को भंडारा प्रसादी वितरित की गई।

सांईखण्डारा पंचायत के उपचुनाव में भाजपा समर्थित अतुल कवडे भारी मतों से विजयी

बैतूल। विकास खंड बैतूल के ग्राम पंचायत सांईखण्डारा में हुए उप चुनाव के चुनावी परिणाम आने के बाद भाजपा समर्थित अतूल कवडे 1086 मत लेकर विजयी हुए है। वहीं उनके निकटतम रामकिशोर को 571 मत प्राप्त हुए वहीं कांग्रेस समर्थित प्रत्याशी को 233 मत मिलना बताया जा रहा है। मतगणना के पश्चात नवनिर्वाचित सरपंच अतूल कवडे अपने समर्थको के साथ जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन पहुंचे जहां भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने नवनिर्वाचित सरपंच का पुष्पहार व भाजपा का अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया एवं समर्थको को मिठाई खिलाकर अभिवादन किया। इस अवसर पर श्री पंवार ने कहा कि यह जीत पूरे गाव की एकता की जीत है। सभी ने एक साथ मिलकर भाजपा समर्थित उम्मीदवार अतूल कवडे को रिकार्ड मतो से विजयी बनाया है। श्री पंवार ने नवनिर्वाचित सरपंच से ग्राम की प्राथमिकता तय कर विकास में पूरे सहयोग का वचन दिया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित सरपंच ने कहा कि पूरे गांव का इस जीत के लिए धन्यवाद है। भाजपा

नेताओं ने भी सहयोग बनाये रखा इसीलिए बडी जीत मिली है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे, मंडल अध्यक्ष सुनील पंवार, विकास मिश्रा, नीतू पटेल, जनपद सदस्य, मंडल महामंत्री रामबाई पदाम, उपसरपंच शांती सलामे, पूर्व सरपंच उत्तम सूर्यवंशी, वरिष्ठ नेता सेवाराम सूर्यवंशी, मदन पदाम, अरविंद राठौर, आशीष पंवार, प्रवीण वराठे, क्रांति पंवार, कमल अडलक, शशीकांत साहू, नितेश उइके, मनीष धुर्वे, विनोद सलामे, संजू परते, बलराम धुर्वे, मनोहर परते सहित बडी संख्या में पार्टी पदाधिकारी सहित ग्रामीणजन मौजूद रहे।

हिंदू सम्मेलन हेतु सुभाष बस्ती का भूमि पूजन कार्यक्रम संपन्न

सुभाष बस्ती में 10 हज़ार समाजजन हिंदू सम्मेलन में शामिल होंगे

धार। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अखिल भारतीय केंद्रीय कार्यक्रम के तहत धार नगर में आगामी 4 जनवरी को आयोजित होने वाले 14 बस्तियों के हिंदू सम्मेलन के निमित्त स्थानीय सुभाष बस्ती में ओंकार नगर स्थित सम्मेलन स्थल लक्ष्मी गार्डन में भूमिपूजन और कार्यालय का शुभारंभ कार्यक्रम संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर सम्मेलन समिति के संयोजक जगदीश जोशी ने कहा कि हम सभी सौभाग्यशाली हैं जो संघ के शताब्दी वर्ष कार्यक्रम में सहभागी बने हैं, देश की सामाजिक एकता हेतु आयोजित हिंदू सम्मेलन और समरसता भोज अपनी बस्ती का ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा जिसमें बस्ती में निवासरत करीब 10000 (दस हजार) समाजजन कार्यक्रम में शामिल होंगे । कार्यक्रम को समिति के संरक्षक कन्हैयालाल यादव, सह संयोजक विपिन राठौर और संजय मेहता ने संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपने शताब्दी वर्ष में देशभर में एक लाख से अधिक हिंदू सम्मेलन का आयोजन हो रहा है कार्यक्रम का ध्येय 'समाज के लिए, समाज का, समाज के द्वारा' है जिसका उद्देश्य सामाजिक एकता और संघ के पंच परिवर्तन के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना है, सभी वक्ताओं ने हिंदू सम्मेलन की ऐतिहासिक सफलता के लिए तन, मन, धन से सहयोग करने का आह्वान किया । कार्यक्रम में नारायण जोशी, योगेश देवड़ा, व्यवस्थापक पार्षद रवि मेहता, सुभाष देवड़ा, विवेक गौड़, मोतीलाल जोशी, अनिल यादव एडवोकेट, बलराम प्रजापत, विजय भाटी, सुभाष बौरासी, आकाश मोदीया, अजय राठौर, हंसराज सोनवानीया, नरेंद्र गजादेसी, राहुल यादव इत्यादि सहित बड़ी संख्या में मातृशक्ति उपस्थित रही । कार्यक्रम का संचालन बलराम प्रजापत व आभार हेमंत प्रजापत ने माना । जानकारी समिति के मीडिया प्रभारी हंसराज सोनवानिया द्वारा दी गई ।

बच्चों एवं पालकों को स्नेह भोज पर आमंत्रित कर किया संवाद

सेवाभाव और सामाजिक सरोकार का दिया संदेश, विजय सेवा न्यास ने बेसहारा बच्चों को गोद लेकर ली है पढ़ाई की जिम्मेदारी

बैतूल। पूर्व सांसद स्व. विजय कुमार खंडेलवाल की स्मृति में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल एवं उनके परिवार द्वारा संचालित किया जा रहे विजय सेवा न्याय द्वारा बेसहारा बच्चों को पढ़ाई करवाने, रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण देने और भविष्य निर्माण का जिम्मा उठाया है। दो वर्षों के दौरान विजय सेवा न्यास बैतूल द्वारा बेसहारा को सहारा प्रकल्प के तहत विभिन्न घटनाओं-दुर्घटनाओं में माता-पिता या पिता के दिवंगत होने पर बेसहारा हुए 46 बच्चों को गोद लेकर उनकी शिक्षा, रोजगार सहित समग्र विकास की जिम्मेदारी ली है। न्यास द्वारा 46 बेसहारा बच्चों की कक्षा 12वीं तक की पढ़ाई के साथ उच्च शिक्षा और रोजगार की चिंता की जा रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने नव वर्ष का पहला दिन गोद

लिए 46 बच्चों और उनके पालकों के साथ बिताया। सेवाभाव एवं सामाजिक सरोकार का संदेश देते हुए श्री खंडेलवाल ने बच्चों और उनके पालकों को बैतूल स्थित निवास पर स्नेह भोज पर आमंत्रित कर संवाद किया। उन्होंने बच्चों से अभिभावक के रूप में चर्चा कर आश्वस्त किया कि उनकी पढ़ाई और भविष्य निर्माण की चिंता वे स्वयं कर रहे हैं। मेहनत से पढ़ाई करें। फीस के साथ ही पाठ्य सामग्री सहित अन्य सुविधाएं उनके द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी।

स्कूल की फीस जमा करने के साथ ही कर रहे हैं आर्थिक मदद – विजय सेवा न्याय द्वारा गोद लिए 46 बच्चों में से 44 बच्चे निजी स्कूलों में तथा दो बच्चे सरकारी स्कूल में अध्ययनरत हैं। निजी स्कूलों में अध्ययनरत 42 बच्चों की फीस प्रतिवर्ष विजय सेवा न्याय द्वारा भुगतान की जा रही है। स्वेच्छा से निजी स्कूलों द्वारा फीस के कुछ अंश में सहभागिता की जा रही है। जबकि दो बच्चे निजी स्कूलों में आरटीई के तहत अध्यनरत हैं। उल्लेखनीय है कि सभी 46 बच्चों को शैक्षिक सामग्री के लिए प्रतिवर्ष न्यास द्वारा आर्थिक सहायता भी दी जाती है । इन बच्चों की परवरिश करने वाले पालकों को प्रति वर्ष बीस-बीस हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इतना ही नहीं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा इन बच्चों की माताओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वरोजगार उपलब्ध कराने के प्रयास किया जा रहे हैं ।

निरंतर जारी रहेगा सहयोग

नव वर्ष की शुरुआत सेवाभावी पहल से करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने 1 जनवरी को विजय सेवा न्याय द्वारा गोद लिए 46 बच्चों और उनके पालकों को अपने निवास पर स्नेह भोज पर आमंत्रित कर संवाद किया ।चर्चा के दौरान उन्होंने बच्चों की शिक्षा ,स्वास्थ्य एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी ली ।बच्चों और पालकों ने खुलकर बात कर पढ़ाई, रुचियां, भविष्य की योजनाओं सहित समस्याओं को साझा किया। श्री खंडेलवाल ने बच्चों और पालकों की समस्याओं का संतुष्टिकारक समाधान किया। उन्होंने कहा कि बच्चों को केवल सहानुभूति नहीं बल्कि शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़कर अवसर देने की जरूरत है। जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा और मेहनत से पढ़ाई कर जिंदगी में बेहतर मुकाम हासिल कर सकेंगे। उन्होंने बच्चों और पालकों को आश्वस्त किया कि यह सहयोग निरंतर जारी रहेगा। बच्चों को शिक्षित करने और पालकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर संभव मदद की जाएगी।

कलेक्टर ने किया मत्स्य विभाग द्वारा संचालित बायो फ्लॉक पॉन्ड एवं नवनिर्मित फिश फीड मील का निरीक्षण, बोले -

किफायती दरों पर उपलब्ध कराया जाए फिश फीड

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने जिले के ग्राम हसनाबाद में मत्स्य विभाग द्वारा संचालित बायो फ्लॉक पॉन्ड एवं नवनिर्मित फिश फीड मील का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बायो फ्लॉक तकनीक के माध्यम से किए जा रहे मत्स्य उत्पादन, फीड निर्माण की प्रक्रिया, गुणवत्ता मानकों तथा विभागीय व्यवस्थाओं की विस्तार से जानकारी ली।

कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि बायो फ्लॉक तकनीक आधुनिक और वैज्ञानिक पद्धति है, जिससे कम जल में अधिक उत्पादन संभव है और यह तकनीक मत्स्य कृषकों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकती है। उन्होंने मत्स्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्थानीय मत्स्य कृषकों को उत्तम गुणवत्ता का फिश फीड उचित एवं किफायती दरों पर उपलब्ध कराया जाए, ताकि फीडिंग बेस्ड फिश कल्चर को बढ़ावा मिल सके और जिले में मत्स्य उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो।

कलेक्टर ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण फीड उपलब्ध होने से मछलियों की वृद्धि बेहतर होगी, उत्पादन लागत कम होगी और किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने विभाग के अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि अधिक से अधिक किसानों को बायो फ्लॉक तकनीक के प्रति जागरूक किया जाए तथा प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जाए, जिससे वे इस प्रणाली को अपनाकर आत्मनिर्भर बन सकें। निरीक्षण के दौरान मत्स्य विभाग के सहायक संचालक श्री प्रशांत हर्ष सहित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

विद्यार्थियों को कॉलेज में प्रवेश के लिए किया जा रहा है प्रेरित

सीहोर (निप्र)। उच्च शिक्षा विभाग शासन के निर्देशानुसार सीहोर के पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस द्वारा 'कॉलेज चलो अभियान' का प्रभावी संचालन किया जा रहा है। यह अभियान ई-प्रवेश सत्र 2026-27 के अंतर्गत विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के अवसरों, पाठ्यक्रमों, प्रवेश प्रक्रिया तथा करियर संभावनाओं से अवगत कराने के लिए संचालित किया जा रहा है। कॉलेज प्राचार्य डॉ रोहिताश्व शर्मा ने बताया कि अभियान के अंतर्गत कॉलेज की टीम द्वारा शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों का भ्रमण कर कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को ई-प्रवेश प्रक्रिया, उपलब्ध पाठ्यक्रम, करियर अवसरों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों—बहुविषयक शिक्षा, क्रेडिट बैंक, कौशल आधारित पाठ्यक्रम, विषय चयन आदि—की जानकारी सरल एवं व्यावहारिक रूप में दी जा रही है।

स्कूल-कॉलेज संपर्क कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूलों में विज़िट तथा आओ-जानें महाविद्यालय कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को कॉलेज की शैक्षणिक सुविधाएँ, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, स्मार्ट कक्षाएँ, खेल परिसर एवं अन्य आधारभूत संसाधनों का अवलोकन कराया जा रहा है। इसी क्रम में टीम द्वारा जिले के अनेक स्कूलों में जाकर विद्यार्थियों से चर्चा की और उन्हें आगे की शिक्षा को जारी रखते हुए कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान प्राध्यापक डॉ राजकुमार राय सहित टीम के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

एनएसएस के तहत स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित

विदिशा (निप्र)। राजमाता विजयाराजे सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या (अग्रणी) महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के तत्वाधान में महाविद्यालय प्रांगण में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शांता अहिरवार के संयोजन में सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के सहयोग से संपन्न हुआ। शिविर के दौरान छात्राओं की नेत्र जांच श्रीमती प्रमिला अहिरवार (नेत्र परीक्षण सहायक) द्वारा की गई। साथ ही महाविद्यालय के समस्त स्टाफ का शुगर परीक्षण एवं रक्तचाप जांच श्री रविंद्र रघुवंशी द्वारा की गई। स्वास्थ्य परीक्षण के माध्यम से छात्राओं एवं कर्मचारियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया तथा आवश्यक परामर्श भी प्रदान किया गया।स्वास्थ्य शिविर में महाविद्यालय की छात्राओं, एनएसएस की स्वयंसेविकाओं एवं समस्त स्टाफ ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सभी के सक्रिय सहयोग से शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आयोजन के उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शांता अहिरवार ने बताया कि नियमित स्वास्थ्य जांच एवं स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

जड़ माहू कीट से बचाव के लिए किसानों को सलाह

सीहोर (निप्र)। जिले में गेहूं की बुआई सर्वाधिक क्षेत्र में बोई जाती है। वर्तमान मेंगेहूं की फसल में कीटव्याधी की समस्या देखनों को मिल रही है। इसको दृष्टिगत रखते हुए कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने-अपने ग्रामों एवं क्षेत्रों का भ्रमण कर गेहूं की फसलों का निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को शीघ्र बोई गई गेहूं की फसल में जड़ माहू कीट की समस्या कहीं-कहीं दिखाई दी है। कृषि विभाग ने बताया कि कीटव्याधी की समस्या सामने आई है कीट गेहूं की फसल में पौधों की जड़ो से रस चूसता है, जिसके कारण पत्तियां ऊपर से नीचे की ओर सूखने लगती है एवं पौधा सूख जाता है। अपनी प्रारंभिक अवस्था में यह कीट छोटे-छोटे पेच में दिखाई देता है, जो कुछ ही दिनों में पूरे खेत में फैल जाता है। जड़ माहू कीट हल्के पीले एवं काले रंग का होता है, जिसका जीवन चक्र 7 से 10 दिन का होता है। इस कीट से बचाव के लिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है किवह अपने खेत की सतत निगरानी करते रहे एवं कीट की समस्या पाये जाने पर एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत स्क्र 60 ग्राम प्रति एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत स्रु की 50 एमएलमात्रा प्रति एकड़ या थायोमेथाक्साम 25 प्रतिशत ड्ब्ल की 50 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के साथ एनपीके 19.19.19 एक किलोग्राम प्रति एकड़ का 150-200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कराएं।

हरदा में पहली बार होगा अंतर्राष्ट्रीय रैपिड शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन

हरदा (निप्र)। जिले में पहली बार एक भव्य अंतर्राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन होने जा रहा है। यह प्रतिष्ठित टूर्नामेंट हरदा जिला शतरंज संगठन के तत्वाधान में इंटरनेशनल स्टैंडर्ड के अनुरूप संपन्न होगा, जिसमें देश-प्रदेश सहित विभिन्न स्थानों के ख्याति प्राप्त और रेटेड खिलाड़ी अपने खेल का जौहर दिखाएंगे। इस टूर्नामेंट की तिथि शतरंज फेडरेशन द्वारा 24 जनवरी शनिवार निर्धारित की गई है। यह टूर्नामेंट कलेक्टर निवास के सामने, इंदौर रोड हरदा डिग्री कॉलेज में होगा, जिसमें देश-विदेश के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। उन्होने बताया कि यह इंटरनेशनल चेस टूर्नामेंट 24 जनवरी राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बालिकाओं को समर्पित रहेगा। इसमें बड़ी संख्या में बालिकाओं की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए जिले एवं आसपास के विद्यालयों और महाविद्यालयों से संपर्क कर उन्हें प्रेरित किया जाएगा। साथ ही खिलाड़ियों के खेल स्तर को बेहतर बनाने हेतु पूर्व में प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने बताया कि शतरंज के शौकीनों और खिलाड़ियों के लिए यह एक बेहतरीन मौका है, जहां वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं। टूर्नामेंट में कुल 1,51,000 रुपये की इनामी राशि और ट्रॉफियां रखी गई है। यह एक रेपिड टूर्नामेंट होगा, जिसमें प्रत्येक खिलाड़ी को 15 मिनट और प्रति चाल 5 सेकंड का अतिरिक्त समय मिलेगा। उन्होने बताया कि टूर्नामेंट के लिये ओपन श्रेणी हेतु 750 रुपये तथा हरदा के स्थानीय खिलाड़ियों के लिये 500 रूपये एन्ट्री फीस निर्धारित की गई है। जीएम/डब्ल्यूजीएम/डब्ल्यूआईएम खिताब धारकों और 2300 से ऊपर रेटेड खिलाड़ियों के लिए प्रवेश निःशुल्क है।

नर्मदापुरम में ठंड की वजह से पहली मौत

नर्मदापुरम(निप्र)। नर्मदापुरम शहर में कड़ाके की ठंड का दौर जारी है। कड़कड़ाती ठंड के बीच बुधवार को एक 35 साल के युवक की मौत का मामला सामने आया। सुबह 8 बजे जिला अस्पताल तिराहे पर मृतक का शव मिला। सूचना पर डॉयल 112 पुलिस स्टाफ मौके पर पहुंचा। मृतक की पहचान नहीं हो पाई। डॉक्टर ने प्रथम दृष्टया मौत की वजह अत्याधिक ठंड बताई है। कोतवाली पुलिस ने पोस्टमार्टम कराया। शव को मर्चुरी रूम में रखवाया है। शिनाख्त के लिए परिजन की तलाश कर रही है। कोतवाली थाना टीआई कंचन सिंह ठाकुर के मुताबिक बुधवार सुबह अस्पताल तिराहे पर एक 35 साल के व्यक्ति की लाश मिली। डॉक्टर ने मौत की वजह प्रथम दृष्टया ठंड बताई है।

जिला प्रशासन द्वारा संचालित स्टोन क्रेशरों की एक साथ सामूहिक जांच

विदिशा (निप्र)। जिला प्रशासन द्वारा जिले में संचालित क्रेशरों की आज सामूहिक रूप से एक साथ जांच कराई गई है। इसके लिए राजस्व अधिकारियों को अपने अपने कार्य क्षेत्रों में दल गठित कर स्वयं की निगरानी में नियमों के तहत जांच प्रतिवेदन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए थे। सिरोंज क्षेत्र में राजस्व अधिकारियों द्वारा सिरोंज तहसील क्षेत्र में आज शिवहरे क्रेशर सारंगपुर सिरोंज की, गर्ग स्टोन क्रेशर की, भार्गव क्रेशर सिरोंज की जांच की गई जिसे आस पास के लोगों द्वारा दो साल से बंद होना बताया गया। सुरभि गुप्ता स्टोन क्रेशर की जांच की गई। कुरवाई क्षेत्र में कुरवाई एसडीएम सहित अन्य राजस्व अधिकारियों ने आज तहसील कुरवाई में पीएस माइंस क्रेसर की जांच एसडीएम द्वारा की गई। विदिशा में ग्राम निमखिरिया तहसील विदिशा नगर तथा अंकित शर्मा स्टोन क्रेशर ग्राम रूसली चैबीसा की एवं राहुल स्टोन क्रेशर ग्राम दहलवाड़ा की जांच की गई है। नटेरन क्षेत्र में संचालित जिन क्रेशरो का आज जांच की गई उनमें ग्राम धमोनीपुरा में शिव कृपा स्टोन क्रेशर, करैया में रघुवंशी स्टोन क्रेशर, ग्राम विसलोनी में कल्पना जैन पत्नि डालचंद जैन का स्टोन क्रेशर की जांच में एक वर्ष से बंद होना पाया गया है।

सुपर सीडर मशीन से उन्नत बोनी, 30 बीघा में गेहूं-चना का उत्कृष्ट अंकुरण

विदिशा (निप्र)। ग्यारसपुर विकास खंड में ग्राम बन जागीर के प्रगतिशील कृषक श्री शैलेश पलिया द्वारा शासन की अनुदान योजना के अंतर्गत सुपर सीडर मशीन प्राप्त की गई है। कृषक द्वारा उक्त मशीन से लगभग 30 बीघा क्षेत्र में गेहूं एवं चने की बोनी की गई है।

कृषक श्री पलिया ने बताया कि सुपर सीडर मशीन के उपयोग से खेत की तैयारी बेहतर हुई तथा गेहूं एवं चने की फसलों का अंकुरण अत्यंत अच्छा हुआ है। मशीन से बोनी करने पर बीज की समान गहराई, अवशेष प्रबंधन और नमी संरक्षण में लाभ मिला, जिससे फसल की प्रारंभिक वृद्धि संतोषजनक रही है। सुपर सीडर जैसी आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग से किसानों को लागत में कमी, समय की बचत एवं उत्पादन में वृद्धि जैसे लाभ प्राप्त हो रहे हैं, जिससे जिले में उन्नत एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिल रहा है।

पचमढ़ी में महादेव-चौरागढ़ पाइपलाइन में सुधार कार्य शुरू

3.5 किमी लाइन की केमिकल वॉशिंग, महाशिवरात्रि पर लोगों को साफ पानी मिलेगा

पिपरिया (निप्र)। पचमढ़ी के महादेव मंदिर से चौरागढ़ तक बिछी पाइपलाइन से जंग लगा पीला पानी निकलने की शिकायत के बाद बुधवार से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने सफाई का काम शुरू कर दिया है, ताकि श्रद्धालुओं को पीने का शुद्ध पानी मिल सके।

दरअसल, करीब 3.5 किलोमीटर लंबी इस पाइपलाइन के लोहे के पाइपों में जंग लग गया था, जिसकी वजह से पानी का रंग खराब हो गया था। यह सारा काम 15 फरवरी से शुरू होने वाले महाशिवरात्रि मेले से पहले पूरा किया जाना है। एसडीएम आकीब खान ने पूरी पाइपलाइन की जांच कर उसे जल्द से जल्द ठीक करने के निर्देश दिए हैं। विभाग की कोशिश है कि मेले के दौरान यहां आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को पानी की कोई किल्लत न हो और उन्हें साफ-सुथरा जल मिले।

20 लोगों की टीम कर रही है केमिकल वॉशिंग

पीएचई विभाग की 20 सदस्यीय टीम इस समय सुधार कार्य में जुटी है। उप यंत्री प्रफुल्ल लोखंडे की देखरेख में पाइपलाइन की केमिकल वॉशिंग की जा रही है, जिससे अंदर जमी गंदगी और जंग पूरी तरह साफ हो सके। इसके साथ ही पानी की टंकियों की सफाई, लीकेज की मरम्मत और मोटर पंपों का मेंटेनेंस भी किया जा रहा है ताकि सप्लाई में कोई रुकावट न आए।

पहाड़ों पर भी पहुंचाई जा रही सुविधा

महादेव मंदिर के पास तीन बड़े नलकूप लगे हैं, जिनसे भारी मोटरों के जरिए साढ़े तीन किलोमीटर दूर ऊंचाई पर स्थित चौरागढ़ मंदिर तक पानी पहुंचाया जाता है। महाशिवरात्रि और नागद्वारी जैसे बड़े मेलों में यहां बहुत भीड़ होती है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पीएचई ने पहाड़ों पर जगह-जगह नल लगाए हैं, ताकि पैदल चलने वाले भक्तों को आसानी से पानी मिल सके।

नर्मदापुरम में नए साल पर 44 शराबियों को पकड़ा

ट्राइडेंट कंपनी के कर्मचारियों को ले जा रही बस का ड्राइवर भी नशे में था

नर्मदापुरम (निप्र)। साल 2025 की विदाई और 2026 के स्वागत के दौरान नर्मदापुरम पुलिस पूरी तरह अलर्ट मोड पर रही। किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए शहर के प्रमुख चौक-चौराहों पर चेकिंग पॉइंट लगाए गए। एएसपी अभिषेक राजन और डीएसपी संतोष मिश्रा ने खुद मोर्चा संभालते हुए शहर की कमान अपने हाथ में ली।

नशे में बस चला रहा था ड्राइवर, मेडिकल के लिए भेजा

एसपी ऑफिस चौराहे पर चेकिंग के दौरान यातायात डीएसपी संतोष मिश्रा और निरीक्षक सुनीता पटेल ने शिवहरे ट्रेवल्स की एक बस को रोका। जांच में बस ड्राइवर नशे में पाया गया, जो ट्राइडेंट कंपनी के कर्मचारियों को लेकर जा रहा था। पुलिस ने तुरंत ड्राइवर को बस से उतारकर मेडिकल जांच के लिए जिला अस्पताल भेजा।

एक्सयूवी गाड़ी जब्त, ड्रिंक एंड ड्राइव के कई मामले

रात करीब 12:45 बजे पुलिस ने शराब पीकर एक्सयूवी गाड़ी चलाते एक ड्राइवर को पकड़ा। वाहन जब्त कर ड्राइवर के खिलाफ कार्रवाई की गई। पुलिस ने ब्रेथ एनालाइजर मशीन से जांच कर शराब पीकर वाहन चलाने वालों को पकड़ा और उनकी गाड़ियां जब्त कीं।

जिलेभर में 44 केस, पुलिस की सख्त चेतावनी

नशे में घूम रहे कई असामाजिक तत्वों को भी पकड़ा गया। ड्रिंक एंड ड्राइव के मामलों में नर्मदापुरम और इटारसी यातायात पुलिस ने 9 केस दर्ज किए, जबकि पूरे जिले में कुल 44 प्रकरण बनाए गए। एसपी साईं कृष्णा थोटा ने लोगों से अपील की कि नए साल का जश्न कानून के दायरे में मनाएं, शराब पीकर वाहन न चलाएं और नियमों का पालन करें।

संवाद योजनातंर्गत नवांकुर संस्थाओं की एक दिवसीय मासिक समीक्षा बैठक

रायसेन (निप्र)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद जिला रायसेन द्वारा 'संवाद योजनातंर्गत नवांकुर संस्थाओं की एक दिवसीय मासिक समीक्षा बैठक जिला पंचायत सभाकक्ष में आयोजित की गई। जिसमें संभाग समन्वयक श्री वरूण आचार्य द्वारा नवीन चयनित नवांकुर संस्थ्ाओं के प्रतिनिधियों से संवाद किया गया और संस्थाओं द्वारा त्रेमासिक कार्ययोजना अनुसार किये गए कार्यो की समीक्षा की गई। संभाग समन्वयक द्वारा नवांकुर संस्थाओं को आगामी दिवसों में कार्ययोजना अनुसार कार्य संचालित किए जाने की जानकारी प्रदान की गई। नवांकुर संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा किए गए कार्यो का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संभाग समन्वयक श्री वरूण आचार्य द्वारा कार्ययोजना अनुरूप सक्रियता से कार्य करने हेतु कहा गया एवं नवांकुर संस्थाओं को परिषद द्वारा जारी दिशा-निर्देश के अनुरूप कार्य करने और कार्यो का प्रतिवेदन नियमित जमा कराए जाने संबंधी जानकारी प्रदान की गई। बैठक में समस्त नवांकुर संस्थाओं द्वारा किए गए कार्यो का प्रस्तुतीकरण किया गया। जिला समन्वयक श्री कल्याणसिंह राजपूत द्वारा नवांकुर संस्थाओं को दस्तावेजीकरण के संबंध में दिशा-निर्देश प्रदान किए गए एवं परिषद द्वारा जारी कैलेण्डर अनुसार कार्यो को संचालित किए जाने की जानकारी दी गई।

डॉ. बोले-अकेले रहने का मन करता तो आप तनाव में ...

स्टूडेंट्स से कहा- बातें शेयर करें और सोशल कार्यक्रमों में शामिल हो

पिपरिया (निप्र)। पिपरिया के शहीद भगत सिंह कॉलेज में बुधवार को छात्रों के लिए एक खास मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कैंप लगाया गया। इस कार्यक्रम का मकसद युवाओं को आज के तकनीकी दौर में बढ़ते मानसिक दबाव और तनाव से निपटने के तरीके सिखाना था। प्रभारी प्राचार्य डॉ. राजीव महेश्वरी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की और बताया कि कैसे ज्यादा मोबाइल और तकनीक के इस्तेमाल से युवाओं में एकाग्रता की कमी और तनाव बढ़ रहा है।

फिल्म के जरिए दिया सकारात्मकता का संदेश

कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी डॉ. एस.के. मेहरा ने कहा कि मानसिक सेहत भी शारीरिक सेहत जितनी ही जरूरी है। वेलनेस क्लब की प्रभारी डॉ. अनीता सेन ने एक छोटी फिल्म दिखाकर छात्रों को समझाया कि कैसे वे नकारात्मक विचारों से बचकर जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया अपना सकते हैं। कॉलेज के 119 छात्र-छात्राओं ने इस सत्र में हिस्सा लिया और करियर और पढ़ाई के दबाव को लेकर खुलकर चर्चा की।

इन लक्षणों से पहचानें कि आप तनाव में हैं : डॉ. अनीता सेन ने छात्रों को बताया कि अगर एकाग्रता में कमी आ रही हो, अकेले रहने का मन करता हो, किसी काम में जी न लगे या मन में मायूसी और उम्मीद खत्म होती दिखे, तो समझें कि आप तनाव का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने सलाह दी कि ऐसे समय में घबराने के बजाय अपनी बात अपनों से साझा करें।

तनाव से बचने के आसान उपाय

एक्सपर्ट्स ने छात्रों को तनाव मुक्त रहने के लिए कुछ जरूरी टिप्स दिए-

बात साझा करें- अपनी परेशानी अपने भाई-बहन, माता-पिता या दोस्तों को जरूर बताएं।

दिनचर्या सुधारें- सुबह जल्दी उठें, समय पर सोएं और पौष्टिक खाना खाएं।

सामाजिक बनें- घर में अकेले रहने के बजाय सामाजिक गतिविधियों और खेलकूद में भाग लें।

योग और ध्यान- नियमित एक्सरसाइज और मेडिटेशन को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।

वर्ल्ड रामायण कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए सीएम मोहन यादव

देश-विदेश से पहुंचे राम भक्त, 4 जनवरी तक होगी

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में चतुर्थ वर्ल्ड रामायण कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। शहर के मानस भवन में 2, 3 और 4 जनवरी को हो रहे इस आयोजन में देश-विदेश के ट्रेडिशनल आर्ट को शामिल किया है।

केरल का म्यूरल आर्ट, तंजोर चित्रण, आंध्र प्रदेश की नाक्षी गुडिया, इंडोनेशिया के शेडो पपेट, श्रीलंका का देगाल दरुआ आर्ट, थाईलैंड की कलाकृतियां भी शामिल की गई हैं। इसके अलावा 1993 में साध्वी ज्ञानेश्वरी दीदी द्वारा बनाई गई मार्बल टाइल पर राजस्थानी मिनिएचर आर्ट सहित सेंड आर्ट लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

चतुर्थ वर्ल्ड रामायण कॉन्फ्रेंस के शुभारंभ में सीएम मोहन यादव शुक्रवार दोपहर को जबलपुर स्थित मानस भवन पहुंचे, उनके साथ कार्यक्रम में केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत भी शामिल हुए। इनके अलावा लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह, राज्यसभा सांसद सुमित्रा बाल्मीक, पद्मभूषण डेविड फ्राले भी मौजूद रहेंगे। इसमें रोजाना शाम 5 बजे से सुंदर कांड पाठ होंगे। 2 और 3 जनवरी को जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य महाराज और 4 जनवरी को बाबा कल्याणदास महाराज आध्यात्मिक सत्र का संबोधन करेंगे।

सीएजी के मध्य क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारंभ

भोपाल। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) के मध्य क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारंभ उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक रीमा प्रकाश ने किया। अरेरा हिल्स स्थित प्रधान महालेखाकार कार्यालय के आरंभ हुए सीएजी के मध्य क्षेत्रीय कार्यालय की कमान उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (मध्य क्षेत्र) संभालेंगे। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार सिद्धार्थ बोन्डाडे, वित्तीय सलाहकार वित्त विभाग मप्र प्रिया पारेख सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विवाह संस्कार और रीति-रिवाज हमारी भारतीय गौरवशाली परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विवाह संस्कार हमारी भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण हिस्सा है। पाणिग्रहण संस्कार भारतीय समाज में विशेष महत्व रखता है। विवाह के माध्यम से कन्या अपने नए जीवन की शुरुआत करती है और माता-पिता का आशीर्वाद उसके जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। ये सभी रीति-रिवाज हमारी गौरवशाली परंपरा के प्रतीक हैं। मुख्यमंत्री ने नव दंपत्ति एवं परिवारजनों को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को नागदा में श्री राजेश धाकड़ के सुपुत्र के विवाह कार्यक्रम में शामिल हुए।

कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गेहलोत भी विवाह कार्यक्रम में शामिल हुए और उन्होंने नवविवाहित वर-वधू रितिक एवं वर्षा को आशीर्वाद प्रदान कर उनके सुखद, समृद्ध एवं मंगलमय दांपत्य जीवन की कामना की। कर्नाटक के राज्यपाल श्री गेहलोत और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने परिवारजनों के साथ सामूहिक फोटो सेशन में सहभागिता की एवं सहभोज भी किया।

इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्री बाल योगी उमेशनाथ, घटिया विधायक श्री सतीश मालवीय, नागदा विधायक श्री तेजबहादुर चौहान, शाजापुर विधायक श्री अरुण भीमावत सहित जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

गाय चराने से रोका, दबंगों ने गोली चलाई...5 घायल

मुरैना में 12 लोग लाठी-डंडों के साथ पहुंचे, बुजुर्ग हाथ जोड़कर माफी मांगता रहा

मुरैना (नप्र)। मुरैना के जौरा विकासखंड के राजाराम का पुरा गांव में दलित परिवार के साथ दबंगों ने मारपीट करते हुए फायरिंग की। पीड़ित परिवार ने खेत में गाय चराने और बाजरे की करब उठाने से मना किया था। आरोप है कि इससे गुस्साए गांव के दबंगों ने दलित परिवार के घर पहुंचकर पहले ताबड़तोड़ फायरिंग की, फिर लाठी-डंडों से मारपीट की।

घटना में परिवार के पांच लोग घायल हैं, जिन्हें जौरा अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पीड़ित परिवार ने पुलिस पर रिपोर्ट दर्ज करने में देरी का भी आरोप लगाया है। घटना नए साल के पहले दिन यानी गुरुवार दोपहर 3 बजे की है। वीडियो शुक्रवार सुबह सामने आया है।

पीड़ित महाराज जाटव के अनुसार गांव के दबंग बनवारी गुर्जर और उसके साथियों की गायें उनके खेत में चर रही थीं। परिवार ने इसका विरोध किया तो उन्होंने बाजरे की करब भी उठा ली। इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया

और दबंगों ने बदला लेने की धमकी दी।

8-10 राउंड फायरिंग की, लाठी-डंडों से पीटा- आरोप है कि बनवारी गुर्जर अपने 10-12 साथियों के साथ दलित परिवार के घर पहुंचा। पहले 8 से 10 राउंड फायरिंग की, इसके बाद लाठी-डंडों से परिवार पर हमला कर दिया गया। वीडियो में भी युवक हाथ में लाठी-डंडे लिए दिख रहे है। मारपीट में रमेश जाटव, महाराज जाटव, बहादुर जाटव, महादेवी जाटव और सिमला जाटव घायल हुए हैं। विवाद के दौरान परिवार के एक बुजुर्ग ने दबंगों के सामने हाथ जोड़कर माफी भी मांगी, लेकिन इसके बावजूद आरोपियों ने मारपीट बंद नहीं की।

पुलिस पर एफआईआर में देरी करने का आरोप- घटना के बाद घायल परिजन जौरा थाना पहुंचे। आरोप है कि उनकी शिकायत तुरंत दर्ज नहीं की गई। देर रात एफआईआर दर्ज की गई। मामले में बनवारी गुर्जर, विश्राम गुर्जर, दामोदर गुर्जर, बंटी गुर्जर और वीरा गुर्जर के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। जौरा एसडीओपी नितिन बघेल ने बताया कि विवाद गाय और चारे को लेकर हुआ था। जांच में सामने आया है कि पहले गुर्जर परिवार के एक युवक के साथ कहासुनी हुई थी, जिसके बाद दोनों पक्षों में मारपीट हुई। वीडियो और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर एफआईआर दर्ज की गई है। मामले की जांच जारी है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल को नियंत्रक शासकीय मुद्रणालय चन्द्रशेखर वालिम्बे ने किसान कल्याण 'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश' की थीम पर प्रकाशित वर्ष 2026 का कैलेंडर लोकभवन में भेंट किया।

जेसीबी की टक्कर से युवक की मौत

दो दोस्त घायल, एक बाइक पर सब्जी लेने निकले थे तीनों दोस्त

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सूखी सेवनिया इलाके में एक जेसीबी ने बाइक सवार तीन युवकों को टक्कर मार दी। हादसे में एक युवक की मौत हो गई। घटना गुरुवार की रात की है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी जेसीबी चालक की गिरफ्तारी फिलहाल नहीं हो सकी है।

पुलिस के मुताबिक अभिषेक कुशवाह पिता रामकिशन कुशवाह (19) निवासी इमलिया कॉलोनी मजदूरी करता था। 6 भाईयों में दूसरे नंबर का अभिषेक, दोस्त राजा और भोला के साथ बाइक पर सवार होकर सब्जी लेने के लिए निकला था। इमलिया हाईवे पर आते ही उनकी बाइक को सामने से आ रही एक जेसीबी ने टक्कर मार दी। हादसे में बाइक चला रहे अभिषेक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि टक्कर लगने से दोनों दोस्त दूर जा गिरे, जिससे उन्हें मामूली चोट आई हैं।

सीमेंट फैक्ट्री की जेसीबी से हुआ हादसा- मृतक के पड़ोसी गौरव मीणा ने बताया कि जिस जेसीबी ने टक्कर मारी है, वह मुगालिया में स्थित एक सीमेंट फैक्ट्री थी। हादसे के बाद आरोपी चालक जेसीबी को लेकर मौके से फरार हो गया था। हालांकि वाहन नंबर पुलिस को दिया, जिसके बाद जेसीबी को थाने में खड़ा कर लिया गया है। आरोपी चालक की अभी गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है।

भोपाल में राजू की तलाश में 6 राज्यों की पुलिस

देशभर में डेरे को संरक्षण देने वालों का डेटा तैयार होगा, पुलिस नेटवर्क ध्वस्त करने में जुटी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ईरानी डेरा अमन कॉलोनी के प्रमुख कुख्यात राजू ईरानी और उसके गिरोह के पांच सदस्यों की तलाश में 6 राज्यों की पुलिस ने भोपाल में डेरा डाल रखा है। इसी के साथ भोपाल पुलिस ईरानी डेरा को अपराधियों को संरक्षण देने वाले तमाम राज्यों में मौजूद उनके करीबियों का डेटा तैयार कर रही है। गिरफ्तार ईरानी गैंग के सदस्यों से उनके काम करने के तरीके, संरक्षण देने वाले और अन्य राज्यों में रहने वाले उनके रिश्तेदारों की जानकारी पुलिस ने हासिल की थी।

भोपाल के ईरानी गैंग के सदस्य वारदातों के बाद प्रमुख रूप से नर्मदापुरम, देवास, मुंबई, बैंगलुरू, दिल्ली, छत्तीसगढ़ जैसे जगहों में फरारी काटने जाते हैं। इसी प्रकार उनके अन्य राज्यों में रहने वाले रिश्तेदार वहां वारदातों के बाद भोपाल की अमन कॉलोनी में फरारी काटने आते हैं।

भोपाल में ईरानी गैंग पर तीन और लूट के केस दर्ज

तीन थाना क्षेत्रों में ईरानी डेरे के बदमाशों ने मोबाइल फोन की झपटमारी की थी। आरोपियों के पकड़े जाने के बाद खुलासा होने पर पुलिस ने केस दर्ज किया। टीटी नगर पुलिस के अनुसार गणेश दोहरे नाम का युवक प्राइवेट काम करता है। गत 25 दिसंबर को वह डिपो चौराहे के पास से पैदल ही गुजर रहा था। इसी दौरान अज्ञात बाइकसवार युवक आया और गणेश के हाथ से मोबाइल झपटकर भाग निकला। पुलिस ने इस मामले में गत दिवस शिकायत मिलने पर प्रकरण दर्ज किया। तस्दीक के दौरान पता चला मोबाइल झपटमारी का आरोपी ईरानी डेरा गैंग का सदस्य है। पिछले दिनों दी गई दबिश में उसे दबोचा गया था।

2 दिसंबर की वारदात, अब केस दर्ज

गोविंदपुरा इलाके में पिछले साल 2 दिसंबर को भी एक वारदात हुई थी। फरियादी सौरभ गजभिए रचना नगर अंडरब्रिज के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान बाइकसवार बदमाशों ने उनके हाथ से मोबाइल फोन छीन लिया था। मामले की शिकायत उन्होंने पोर्टल पर पुलिस को की थी। यहां से वह शिकायत साइबर सेल चली गई। साइबर सेल में जब झपटे गए मोबाइल फोन की ट्रेकिंग की गई तो पता चला कि वह फोन अमन कॉलोनी स्थित डेरे में सक्रिय है। साइबर सेल ने यह शिकायत गोविंदपुरा थाने में की। पुलिस ने झपटमारी का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

29 दिन बाद एफआईआर दर्ज की

निशातपुरा पुलिस ने भी लूट की एफआईआर दर्ज की है। पुलिस ने बताया की 18 वर्षीय विशाल शाक्य पिता राधेश्याम शाक्य गत 3 दिसंबर को रात पौने ग्यारह बजे जेपी नगर के पास से गुजर रहा था। इसी दौरान बाइकसवार तीन बदमाशों ने विशाल का मोबाइल झपट लिया था। इस मामले में भी पुलिस ने शिकायत मिलने पर गत दिवस प्रकरण दर्ज किया। केस लंबी जांच के बाद दर्ज किया जाना बताया जा रहा है। तीनों ही मामलों आरोपी ईरानी डेरा गैंग दबिश के दौरान पकड़े जा चुके हैं। तथा उन्होंने झपटमारी और चोरी की गई वारदातें कबूल भी की हैं।

जुए में रकम हारने के बाद गार्ड का सुसाइड

सुसाइड नोट में लिखा- 70 हजार हारा था, 11 हजार बकाया नहीं दे सकता

भोपाल (नप्र)। बिलखिरिया इलाके में जुए में 70 हजार रुपए हार जाने से दुखी सिक्योरिटी गार्ड ने अपने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। परिजनों ने फड़ संचालक पर प्रताड़ित करने के आरोप भी लगाए हैं। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना गुरुवार की रात की है। कटनी स्थित गांव से लौटे परिजनों की मौजूदगी में शुक्रवार को शव का पीएम कराया गया।

पुलिस के मुताबिक महाकाल सिटी में रहने वाले 50 वर्षीय राजेश त्रिपाठी एक निजी कॉलेज में सिक्योरिटी गार्ड थे। उसकी पत्नी और बच्चे गांव चले गए थे, और वह घर में अकेला था। शुक्रवार की सुबह उसने अपने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक का शव बरामद कर उसे पीएम के लिए भेज दिया।

सुसाइड नोट में पैसों का जिक्र- कमरे की तलाश में पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला। जिसमें उसने लिखा था कि वह जुए में 70 हजार रुपए हार गया था। उसे 2 जनवरी को 11 हजार रुपए उधारी के देने थे, लेकिन उसके पास रुपयों की व्यवस्था नहीं हो पाई। इसलिए वह अपनी जान दे रहा है।

बेटा बोला गांव का सुदीप प्रताड़ित करता था- मृतक के बेटे रोहित त्रिपाठी ने बताया कि गांव में रहने वाला सुदीप जुआ चलाता है। हम बीते पांच दिन से पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कटनी स्थित गांव गए थे।

प्रदेश में पचमढ़ी सबसे ठंडा, पारा 5.4 डिग्री

भोपाल, इंदौर-ग्वालियर में कोहरे से ट्रेनें लेट, कई शहरों में विजिबिलिटी कम 50 मीटर

भोपाल (नप्र)। शुक्रवार सुबह भी एमपी में तेज ठंड रही। मध्यप्रदेश में कड़ाके की ठंड तो कम हुई है, लेकिन कोहरे और सर्द हवाओं का जोर है। पचमढ़ी प्रदेश में सबसे ठंडा रहा, लेकिन शुक्रवार सुबह कोहरे की वजह से भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर की ओर जाने वाली ट्रेनें 2 घंटे तक लेट हैं। दिल्ली से आने वाली मालवा, शताब्दी, सचखंड समेत अन्य ट्रेनों पर कोहरे का असर देखने को मिल रहा है।

शुक्रवार सुबह खजुराहो में घना कोहरा रहा। भोपाल, दतिया, ग्वालियर, रतलाम, दमोह, रीवा, सागर, सतना, गुना, इंदौर, रायसेन, राजगढ़, उज्जैन, मलाजखंड, श्योपुर, नर्मदापुरम, सिवनी, नौगांव और मंडला में भी विजिबिलिटी कम रही।

दूसरी ओर, रात के तापमान में बढ़ोतरी हुई है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन और ग्वालियर में पारा 10 डिग्री से ऊपर ही रहा। प्रदेश में सिर्फ पचमढ़ी, शिवपुरी, टीकमगढ़, राजगढ़, रीवा और नौगांव ही ऐसे रहे, जहां तापमान 10 डिग्री से नीचे रहा। इससे पहले गुरुवार को ग्वालियर और चंबल संभाग में बादल छाए रहे। ग्वालियर में हल्की बारिश भी हुई।

कोहरे की वजह से ट्रेनों पर असर

प्रदेश में तेज ठंड और कोहरे की वजह से जनजीवन पर भी असर पड़ रहा है। दिल्ली से आने वाली ट्रेनें लगातार लेट हो रही है। कई ट्रेनें तो 8 से 10 घंटे तक लेट है।

पचमढ़ी में 5.4 डिग्री पारा, कल्याणपुर दूसरे नंबर पर

प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में नए साल में सबसे ज्यादा ठंड है। बुधवार-गुरुवार की रात में यहां पारा 5.4 डिग्री दर्ज किया गया। शहडोल के कल्याणपुर में 6.4 डिग्री रहा। शिवपुरी, खजुराहो, अमरकंटक, राजगढ़, रीवा, नौगांव, उमरिया, मंडला, मलाजखंड, टीकमगढ़, दतिया, नरसिंहपुर, रायसेन, छिंदवाड़ा और इंदौर में पारा 10 डिग्री से नीचे रहा।

इस बार कड़ाके की ठंड का दौर

इस बार मध्यप्रदेश में नवंबर-दिसंबर की सर्दी ने रिकॉर्ड तोड़ दिया। नवंबर में 84 साल में सबसे ज्यादा ठंड पड़ी तो दिसंबर में 25 साल का रिकॉर्ड टूटा। मौसम विभाग ने नवंबर-दिसंबर की तरह ही जनवरी में भी कड़ाके की ठंड पड़ने का अनुमान जताया है।

एक्सपर्ट की मानें तो जनवरी में प्रदेश में माइनस वाली ठंड गिर चुकी है। अबकी बार भी तेज सर्दी, घना कोहरा छाने के साथ शीतलहर भी चलेगी।

सतना में बिजनेसमैन ने पानी में फिनाइल पिलाई, कहता था- तेरे मरने से लोन माफ हो जाएगा

35 लाख के लिए पत्नी की हत्या की कोशिश

सतना (नप्र)। सतना में कर्ज से बचने की सनक में एक युवक ने पत्नी की हत्या का प्रयास किया। उसने पानी में फिनाइल की गोलियां मिलाकर पत्नी को जबरन पिला दिया। महिला की हालत बिगड़ने पर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। पत्नी की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है।

मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र के बगहा इलाके का है। पूर्णिमा त्रिपाठी ने पुलिस को बताया कि उनके पति अनुराग सोहन त्रिपाठी ने उनके नाम से रुद्रा इंटरप्राइजेज नाम की फर्म पंजीकृत कराई थी, जो सर्जिकल सामग्री के व्यवसाय से जुड़ी थी। इसी फर्म के नाम पर एसबीआई बैंक से 35 लाख रुपए का लोन लिया गया।

शराब पीकर आया और मारपीट शुरू की- पूर्णिमा ने पुलिस को बताया कि लोन की पूरी राशि का उपयोग पति ने किया, जबकि कर्ज की जिम्मेदारी पत्नी के नाम पर रही। पीड़िता के अनुसार, 28

दिसंबर की रात अनुराग शराब के नशे में घर आया और गाली-गलौज करते हुए मारपीट की, जिससे उनके चेहरे और मुंह पर चोटें आईं।

इसके अगले दिन 29 दिसंबर की सुबह करीब 10:30 बजे विवाद फिर बढ़ गया। इसी दौरान आरोपी ने बाथरूम में रखी फिनाइल की गोलियों को पीसकर पानी में मिलाई और पत्नी को जबरन पिला दिया। महिला का आरोप है कि पति ने कहा कि उसके मर जाने पर 35 लाख का लोन माफ हो जाएगा। महिला 1 जनवरी तक अस्पताल में भर्ती रही। डिस्चार्ज होने के बाद परिजन के साथ देर रात थाने में शिकायत दर्ज कराई।

शादी के तीन महीने बाद मारपीट शुरू की

पीड़िता के पिता राजकुमार पांडेय ने बताया कि बेटी की शादी जून 2020 में हुई थी। शादी के कुछ महीनों बाद से ही दामाद का व्यवहार हिंसक हो गया था। कई बार समाज और परिवार के लोगों ने समझाने का प्रयास किया, लेकिन स्थिति नहीं बदली। उन्होंने कहा कि 28 दिसंबर की रात बेटी के साथ जो हुआ, वह माफ करने योग्य नहीं है।

पुलिस को मारपीट की तस्वीरें सौंपी

फिनाइल मिला पानी पीने के बाद पूर्णिमा की हालत अचानक बिगड़ गई और उन्हें लगातार उल्टियां होने लगीं। होश आने पर उन्होंने अपने पिता को फोन कर पूरी घटना बताई। परिजन तुरंत मौके पर पहुंचे और उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले गए, जहां बिरला अस्पताल में उनका उपचार किया गया।

पीड़िता ने यह भी बताया कि शादी के बाद से ही पति मारपीट और प्रताड़ना दे रहा था। इससे पहले भी इस संबंध में जसो थाने में शिकायत दर्ज कराई जा चुकी है। महिला ने पुलिस को मारपीट की पुरानी तस्वीरें भी सौंपी हैं, जिन्हें जांच में शामिल किया गया है।